# ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ

## (सन् 07 हि०)

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० अह्ज़ाब के तीन बाज़ुओं में से दो मज़बूत बाज़ुओं को तोड़कर फ़ारिग़ हो गए, तो तीसरे बाज़ू की ओर तवज्जोह का भरपूर मौक़ा मिल गया। तीसरा बाज़ू वे बद्दू थे, जो नज्द के रेगिस्तान में रहते थे और रह-रहकर लूटमार की कार्रवाइयां करते रहते थे।

चूंकि ये बद्दू किसी आबादी या शहर के रहने वाले न थे और उनका निवास मकानों और क़िलों के अन्दर न था, इसलिए मक्का वालों और ख़ैबर के रहने वालों के मुक़ाबले में इन पर पूरी तरह क़ाबू पा लेना और इनके शर व फ़साद की आग पूरे तौर पर बुझा देना बहुत कठिन था, इसलिए इनके हक़ में आतंकित करने वाली सज़ा भरी कार्रवाइयां ही फ़ायदेमंद हो सकती थीं।

चुनांचे इन बद्दुओं पर रौब व दबदबा क़ायम करने की ग़रज़ से—और दूसरों के मुताबिक़ मदीने के चारों ओर छापा मारने के इरादे से जमा होने वाले बद्दुओं को बिखेर देने की ग़रज से—नबी सल्ल० ने सज़ा देने वाला हमला फ़रमाया, जो ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ के नाम से मशहूर है।

ग़ज़वा की तारीख़ लिखने वालों ने आमतौर से इस ग़ज़वे का उल्लेख 04 हि० में किया है। लेकिन इमाम बुख़ारी ने इसका ज़माना सन् 07 हि० बताया है। चूंकि इस ग़ज़वे में हज़रत अबू मूसा अशअरी और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने शिर्कत की थी, इसलिए यह इस बात की दलील है कि यह ग़ज़वा ख़ैबर के बाद पेश आया था। (महीना शायद रबीउल अव्वल का था), क्योंकि अबू हुरैरह रज़ि० उस वक़्त मदीना पहुंचकर मुसलमान हुए थे, जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ख़ैबर के लिए मदीना से जा चुके थे।

फिर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० मुसलमान होकर सीधे नबी सल्ल० की सेवा में ख़ैबर पहुंचे और जब पहुंचे तो ख़ैबर जीता जा चुका था।

इसी तरह हज़रत अबू मूसा अशअरी हब्श से उस वक़्त नबी सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे थे जब ख़ैबर जीता जा चुका था, इसलिए ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ में इन दोनों सहाबियों की शिर्कत इस बात की दलील है कि यह ग़ज़वा ख़ैबर के बाद ही किसी वक़्त पेश आया था।

सीरत लिखने वालों ने इस ग़ज़वा के बारे में जो कुछ लिखा है, उसका सार

यह है कि नबी सल्ल० ने क़बीला अनमार या बनू ग़तफ़ान की दो शाखाओं बनी सालबा और बनी मुहारिब के जमा होने की ख़बर सुनकर मदीना का इन्तिज़ाम हज़रत अबूज़र या हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान के हवाले किया और झट चार सौ या सात सौ सहाबा किराम को साथ लेकर नज्द के इलाक़े का रुख़ किया। फिर मदीने से दो दिन की दूरी पर नख़्ल नामी जगह पहुंचकर बनू ग़तफ़ान की एक टुकड़ी का सामना हुआ, लेकिन लड़ाई नहीं हुई। अलबत्ता आपने इस मौक़े पर लड़ाई की हालत वाली नमाज़ (सलाते ख़ौफ़) पढ़ाई। बुख़ारी की एक रिवायत में यह है कि नमाज़ की इक़ामत कही गई और आपने एक गिरोह को दो रक्अत नमाज़ पढ़ाई। यों अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चार रक्अतें हुईं और क़ौम की दो रक्अतें हुईं।[1]

सहीह बुख़ारी में हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० से रिवायत है कि हम लोग अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ निकले। हम छः आदमी थे और एक ही ऊंट था, जिस पर बारी-बारी सवार होते थे। इससे हमारे क़दम छलनी हो गए। मेरे भी दोनों पांव घायल हो गए और नाख़ून झड़ गया। चुनांचे हम लोग अपने पांवों पर चीथड़े लपेटे रहते थे। इसलिए उसका नाम ज़ातुर्रिक़ाअ (चीथड़ों वाला) पड़ गया, क्योंकि हमने उस ग़ज़वे में अपने पांवों पर चीथड़े और पट्टियां बांध और लपेट रखी थीं।[2]

और सहीह बुख़ारी ही में हज़रत जाबिर रज़ि० से यह रिवायत है कि हम लोग ज़ातुर्रिक़ाअ में नबी सल्ल० के साथ थे। (चलन यह था कि) जब हम किसी छायादार पेड़ पर पहुंचते तो उसे नबी सल्ल० के लिए छोड़ देते थे।

(एक बार) नबी सल्ल० ने पड़ाव डाला और लोग पेड़ की छाया लेने के लिए इधर-उधर कांटेदार पेड़ों के बीच बिखर गए। रसूलुल्लाह सल्ल० भी एक पेड़ के नीचे उतरे और उसी पेड़ से तलवार लटका कर (सो गए)।

हज़रत जाबिर फ़रमाते हैं कि हमें बस एक नींद आई थी कि इतने में एक मुश्रिक ने आकर अल्लाह के रसूल सल्ल० की तलवार सौंत ली और बोला, तुम मुझसे डरते हो?

आपने फ़रमाया, नहीं।

उसने कहा, तब तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा?

---

1. सहीह बुख़ारी 1/407, 408, 2/593,
2. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ 2/592, सहीह मुस्लिम, बाब ग़ज़वा ज़ातुर्रिक़ाअ 2/118

आपने फ़रमाया, अल्लाह !

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हमें अचानक रसूलुल्लाह सल्ल० पुकार रहे थे। हम पहुंचे तो देखा एक बद्दू (आराबी) आपके पास बैठा है। आपने फ़रमाया, मैं सोया था और इसने मेरी तलवार सौंत ली। इतने में मैं जाग गया और सौंती हुई तलवार उसके हाथ में थी। इसने मुझसे कहा, तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा ?

मैंने कहा, अल्लाह ! तो अब यह वही आदमी बैठा हुआ है। फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसे सज़ा न दी।

अबू अवाना की रिवायत में इतना और मिलता है कि (जब आपने उसके सवाल के जवाब में अल्लाह कहा, तो) तलवार उसके हाथ से गिर पड़ी। फिर वह तलवार अल्लाह के रसूल सल्ल०ने उठा ली और फ़रमाया, अब तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा ?

उसने कहा, आप अच्छे पकड़ने वाले होइए (यानी एहसान कीजिए)

आपने फ़रमाया, तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूं।

उसने कहा, मैं आपसे अह्द करता हूं कि आपसे लड़ाई नहीं करूंगा और न आपसे लड़ाई करने वालों का साथ दूंगा।

हज़रत जाबिर रज़ि० का बयान है कि इसके बाद आपने उसकी राह छोड़ दी और उसने अपनी क़ौम में जाकर कहा, मैं तुम्हारे यहां सबसे अच्छे इंसान के पास से आ रहा हूं।[1]

सहीह बुख़ारी की रिवायत में जिसे मुसद्दिद ने अबू अवाना से और उन्होंने अबू बिश्र से रिवायत किया है, बताया जाता है कि उस आदमी का नाम ग़ौस बिन हारिस था।[2]

इब्ने हजर कहते हैं कि वाक़दी के नज़दीक इस घटना के विस्तार में यह बयान किया गया है कि उस बद्दू (आराबी) का नाम दासूर था और उसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था, लेकिन वाक़दी के कलाम से ज़ाहिर में मालूम होता है कि ये अलग-अलग दो घटनाएं थीं, जो दो अलग-अलग ग़ज़्वों में घटी थीं।[3] (वल्लाहु आलम)

---

1. मुख़्तसरुस्सीरः लेख : शेख़ अब्दुल्लाह नज्दी, पृ० 264, साथ ही देखिए फ़त्हुल बारी 7/416
2. सहीह बुख़ारी 2/593
3. फ़त्हुल बारी 7/428

इस ग़ज़्वे से वापसी में सहाबा किराम ने एक मुश्रिक औरत को गिरफ़्तार कर लिया। इस पर उसके शौहर ने नज़्र मानी कि वह मुहम्मद के साथियों के अन्दर एक ख़ून बहाकर रहेगा। चुनांचे वह रात के वक़्त आया। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दुश्मन से मुसलमानों की हिफ़ाज़त के लिए दो आदमियों यानी इबाद बिन बिश्र और अम्मार बिन यासिर रज़ि० को पहरे पर लगा रखा था।

जिस वक़्त वह आया, हज़रत इबाद खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे। उसने इसी हालत में उनको तीर मारा। उन्होंने नमाज़ तोड़े बग़ैर तीर निकालकर झटक दिया। उसने दूसरा और तीसरा तीर मारा, लेकिन उन्होंने नमाज़ न तोड़ी और सलाम फेरकर ही फ़ारिग़ हुए। फिर अपने साथी को जगाया।

साथी ने (हालात जानकर) कहा, सुब्हानल्लाह! आपने मुझे जगा क्यों न दिया?

उन्होंने कहा, मैं एक सूरः पढ़ रहा था। गवारा न हुआ कि उसे काट दूं।[1]

संगदिल आराब को आतंकित और भयभीत करने में इस ग़ज़्वे का बड़ा असर रहा। हम इस ग़ज़्वे के बाद पेश आने वाली सराया पर नज़र डालते हैं तो देखते हैं कि ग़तफ़ान के इन क़बीलों ने इस ग़ज़्वे के बाद सर उठाने की जुर्रत न की, बल्कि ढीले पड़ते-पड़ते ढह गए और आख़िर में इस्लाम क़ुबूल कर लिया, यहां तक कि इन बद्दुओं के कई क़बीले हमको फ़त्हे मक्का और ग़ज़्वा हुनैन में मुसलमानों के साथ नज़र आते हैं और उन्हें ग़ज़्वा हुनैन के माले ग़नीमत में से हिस्सा दिया जाता है। फिर फ़त्हे मक्का से वापसी के बाद इनके पास सदक़ा वसूल करने के लिए इस्लामी हुकूमत के कर्मचारी भेजे जाते हैं और वे बाक़ायदा अपने सदक़े वसूल करते हैं।

ग़रज़ इस रणनीति से वे तीनों बाज़ू टूट गए जो ख़ंदक़ की लड़ाई में मदीने पर हमलावर हुए थे और इसकी वजह से पूरे इलाक़े में सुख-शान्ति का दौर-दौरा हो गया।

इसके बाद कुछ क़बीलों ने कुछ इलाक़ों में जो हंगामे किए, उस पर मुसलमानों ने बड़ी आसानी से क़ाबू पा लिया, बल्कि इसी ग़ज़्वे के बाद बड़े-बड़े शहरों और देशों पर विजय पाने का रास्ता हमवार करना शुरू कर दिया, क्योंकि इस ग़ज़्वे के बाद देश के भीतर हालात पूरी तरह इस्लाम और मुसलमानों के लिए साज़गार हो चुके थे।

---

1. ज़ादुल मआद 2/112, इस ग़ज़्वे की विस्तृत जानकारी के लिए देखिए इब्ने हिशाम, 2/203-209, ज़ादुल मआद 2/110, 111-112, फ़त्हुल बारी 7/417-428

## सन् 07 हि० के कुछ सराया (झड़पें)

इस ग़ज़वे से वापस आकर रसूलुल्लाह सल्ल० शव्वाल 07 हि० तक मदीना में ठहरे रहे और इस बीच बहुत से सराया (ऐसी टुकड़ियां जिसमें अल्लाह के रसूल सल्ल० शरीक नहीं होते थे) रवाना किए, कुछ का विवेचन यह है—

### 1. सरीया क़दीद (सफ़र या रबीउल अव्वल सन् 07 हि०)

यह सरीया ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लैसी की कमान में क़दीद की ओर क़बीला बनू मलूह को सज़ा देने के लिए रवाना किया गया। वजह यह थी कि बनू मलूह ने बिश्र बिन सुवैद के साथियों को क़त्ल कर दिया था और उसी का बदला लेने के लिए इस सरीया की रवानगी अमल में आई थी। इस सरीया ने रात में छापा मारकर बहुत से लोगों को क़त्ल कर दिया और जानवर हांक लाए। पीछे से दुश्मन ने एक बड़ी फ़ौज के साथ पीछा किया, लेकिन जब मुसलमानों के क़रीब पहुंचे, तो वर्षा होने लगी और एक बड़ी बाढ़ आ गई जो दोनों फ़रीक़ों के बीच में रोक बन गई। इस तरह मुसलमानों ने बाक़ी रास्ता भी सलामती के साथ तै कर लिया।

### 2. सरीया हिसमी (जुमादल आख़िर 07 हि०)

इसका ज़िक्र दुनिया के बादशाहों के पत्र के अध्याय में हो चुका है।

### 3. सरीया तरबा (शाबान 07 हि०)

यह सरीया हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के नेतृत्व में भेजा गया। उनके साथ तीस आदमी थे, जो रात में सफ़र करते और दिन में छिप जाते थे, लेकिन हवाज़िन को पता चल गया और वे निकल भागे। हज़रत उमर रज़ि० उनके इलाक़े में पहुंचे तो कोई भी न मिला और वह मदीना पलट आए।

### 4. सरीया अतराफ़ फ़िदक (शाबान सन् 07 हि०)

यह सरीया हज़रत बशीर बिन साद अंसारी रज़ि० के नेतृत्व में तीस आदमियों के साथ बनू मुर्रा को सज़ा देने के लिए रवाना किया गया। हज़रत बशीर ने उनके इलाक़े में पहुंचकर भेड़-बकरियां और जानवर हांक लिए और वापस हो गए। रात में दुश्मन ने आ लिया। मुसलमानों ने जमकर तीरंदाज़ी की, लेकिन आख़िरकार बशीर और उनके साथियों के तीर ख़त्म हो गए, उनके हाथ ख़ाली हो गए और उसके नतीजे में सबके सब क़त्ल कर दिए गए, सिर्फ़ बशीर ज़िंदा बचे। उन्हें घायल हाथ में उठाकर फ़िदक लाया गया और वहीं यहूदियों के

पास ठहरे, यहां तक कि उनके घाव भर गए। इसके बाद वह मदीना आए।

## 5. सरीया मीफ़ुआ (रमज़ान 07 हि०)

यह सरीया हज़रत ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह लैसी के नेतृत्व में बनू अवाल और बनू अब्द बिन सालबा को सज़ा देने के लिए भेजा गया और कहा जाता है कि क़बीला जुहैना की शाखा हरक़ात की सज़ा के लिए रवाना किया गया। मुसलमानों की तायदाद 130 थी। उन्होंने दुश्मन पर एक जुट होकर हमला किया और जिसने भी सर उठाया, उसे क़त्ल कर दिया, फिर पशु और भेड़-बकरियां हांक लाए।

इसी सरीया में हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० ने नुहैक बिन मरदास को ला इला-ह इल्लल्लाहु कहने के बावजूद क़त्ल कर दिया था और इस पर नबी सल्ल० ने ग़ुस्से में फ़रमाया था कि तुमने उसका दिल चीरकर क्यों न मालूम कर लिया कि वह सच्चा था या झूठा?

## 6. सरीया ख़ैबर, शव्वाल 07 हि०

इसी सरीया में तीस सवार थे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० के नेतृत्व में भेजा गया था। वजह यह थी कि असीर या बशीर बिन ज़राम बनू ग़तफ़ान को मुसलमानों पर चढ़ाई करने के लिए जमा कर रहा था। मुसलमानों ने असीर को यह उम्मीद दिलाकर कि अल्लाह के रसूल सल्ल० उसे ख़ैबर का गवर्नर बना देंगे, उसके तीस साथियों सहित अपने साथ चलने पर तैयार कर लिया, लेकिन क़रक़रा न्यार पहुंचकर दोनों फ़रीक़ों में बदगुमानी पैदा हो गई, जिसके नतीजे में असीर और उसके तीस साथियों को जान से हाथ धोना पड़ा।

## 7. सरीया यमन व जबार (21 शव्वाल 07 हि०)

जबार बनू ग़तफ़ान और कहा जाता है कि बनू फ़ज़ारा और बनू अज़रा के इलाक़े का नाम है। यहां हज़रत बशीर बिन काब अंसारी रज़ि० को तीन सौ मुसलमानों के साथ रवाना किया गया। मक़सद था एक बड़े जत्थे को बिखेर देना, जो मदीने पर हमलावर होने के लिए जमा हो रहा था। मुसलमान रातों रात सफ़र करते और दिन में छिपे रहते थे।

जब दुश्मन के हज़रत बशीर के आने की ख़बर हुई तो वह भाग खड़ा हुआ। हज़रत बशीर ने बहुत से जानवरों पर क़ब्ज़ा किया। दो आदमी भी क़ैद किए और जब इन दोनों को लेकर नबी सल्ल० की ख़िदमत में मदीना पहुंचे, तो दोनों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिंया।

## 8. सरीया ग़ाबा

इसे इमाम इब्ने क़य्यिम ने उमरा क़ज़ा से पहले सन् 07 हि० के सराया में गिना है।

इसका सार यह है कि क़बीला जश्म बिन मुआविया का एक व्यक्ति बहुत से लोगों को साथ लेकर ग़ाबा आया। वह चाहता था कि बनू क़ैस को मुसलमानों से लड़ने के लिए जमा करे। नबी सल्ल० ने हज़रत अबू हदरद को सिर्फ़ दो आदमियों के साथ रवाना फ़रमाया कि उसकी ख़बर और उसका पता लेकर आएं। वह सूर्य डूबने के वक़्त उन लोगों के पास पहुंचे। अबू हदरद एक ओर छिप गए और उनके दोनों साथी दोनों ओर छिप गए। उन लोगों के चरवाहे ने देर कर दी, यहां तक कि शाम की स्याही जाती रहीं, चुनांचे उनका रईस तंहा उठा, जब अबू हदरद के पास से गुज़रा तो उन्होंने तीर मारा जो दिल पर जाकर बैठा और वह कुछ बोले बग़ैर जा गिरा। अबू हदरद ने सर काटा और तक्बीर कहते हुए लश्कर की ओर दौड़ लगाई। उनके दोनों साथियों ने भी तक्बीर करते हुए दौड़ लगाई। दुश्मन भाग खड़ा हुआ और ये तीनों हज़रात बहुत से ऊंट ओर बकरियां हांक लाए।[1]

---

1. ज़ादुल मआद 2/149, 150। इब्ने हिशाम 2/629, 630, इब्ने हिशाम के यहां इब्ने अीब हदरद है। इन सराया का विस्तृत विवेचन रहमतुल लिल आलमीन 2/229, 230, 231, ज़ादुल मआद 2/148, 149, 150, तलक़ीहुल फ़हूम मय हाशिए पृ० 31 और मख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह नज्दी पृ० 322, 323, 324 में देखा जा सकता है।

# उमरा क़ज़ा

इमाम हाकिम कहते हैं, यह ख़बर तवातुर के साथ साबित है कि जब ज़ीक़ादा का चांद हो गया, तो नबी सल्ल० ने अपने सहाबा किराम रज़ि० को हुक्म दिया कि अपने उमरे की क़ज़ा के तौर पर उमरा करें और कोई भी आदमी जो हुदैबिया में हाज़िर था, पीछे न रहे। चुनांचे (इस मुद्दत में) जो लोग शहीद हो चुके थे, उन्हें छोड़कर बाक़ी सभी लोग रवाना हो गए और हुदैबिया वालों के अलावा कुछ और लोग भी उमरा करने के लिए साथ निकले। इस तरह तायदाद दो हज़ार हो गई। औरतें और बच्चे इनके अलावा थे।[1]

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस मौक़े पर अबू रहम ग़िफ़ारी रज़ि० को मदीना में अपना जानशीं मुक़र्रर किया, साठ ऊंट साथ लिए और नाजिया बिन जुन्दुब अस्लमी को उनकी देखभाल का काम सौंपा। ज़ुल हुलैफ़ा से उमरे का एहराम बांधा और लब्बैक की सदा लगाई। आपके साथ मुसलमानों ने भी लब्बैक पुकारा और क़ुरैश की ओर से बद-अह्दी के अंदेशे की वजह से हथियार ओर योद्धाओं के साथ मुस्तैद होकर निकले।

जब याजिज घाटी पहुंचे तो सारे हथियार यानी ढाल, सपर, तीर, नेज़े सब रख दिए और उनकी हिफ़ाज़त के लिए औस बिन ख़ौला अंसारी रज़ि० की मातहती में दो सौ आदमी वहीं छोड़ दिए और सवार का हथियार और म्यान में रखी हुई तलवारें लेकर मक्का में दाख़िल हुए।[2]

अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का में दाख़िले के वक़्त अपनी क़सवा नामी ऊंटनी पर सवार थे। मुसलमानों ने तलवारें लटका रखी थीं और अल्लाह के रसूल सल्ल० को घेरे में लिए हुए लब्बैक-लब्बैक पुकार रहे थे।

मुश्रिक मुसलमानों का तमाशा देखने के लिए (घरों से) निकलकर काबा के उत्तर में वाक़े जबले क़ुऐक़आन पर (जा बैठे थे)। उन्होंने आपस में बातें करते हुए कि तुम्हारे पास एक ऐसी जमाअत आ रही है जिसे यसरिब के बुख़ार ने तोड़ डाला है, इसलिए नबी सल्ल० ने सहाबा किराम को हुक्म दिया कि वे पहले तीन चक्कर दौड़कर लगाएं। अलबत्ता रुक्ने यमानी और हजरे अस्वद के दर्मियान सिर्फ़ चलते हुए गुज़रें। कुल (सातों) चक्कर दौड़कर लगाने का सिर्फ़ हुक्म इसलिए नहीं दिया कि रहमत व शफ़क़त मक़्सूद था।

---

1. फ़त्हुल बारी 7/500
2. वही, मय ज़ादुल मआद 2/151

इस हुक्म का मंशा यह था कि मुश्रिक आपकी ताक़त देख लें।[1]

इसके अलावा नबी सल्ल० ने इज़्तिबाअ का भी हुक्म दिया था। इज़्तिबाअ का मतलब यह है दाहिना कंधा खुला रखें (और चादर दाहिनी बग़ल के नीचे से गुज़ारकर आगे-पीछे दोनों ओर से) उसका दूसरा किनारा बाएं कंधे पर डाल दें।

अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का में उस पहाड़ी घाटी के रास्ते में दाख़िल हुए जो हजून पर निकलती है। मुश्रिकों ने आपको देखने के लिए लाइन लगा रखी थी। आप बराबर लब्बैक कह रहे थे, यहां तक कि (हरम पहुंचकर) अपनी छड़ी से हजरे अस्वद को छुआ, फिर तवाफ़ किया, मुसलमानों ने भी तवाफ़ किया। उस वक़्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० तलवार लटकाए अल्लाह के रसूल सल्ल० के आगे-आगे चल रहे थे और वीरता के ये पद पढ़ रहे थे—

'कुफ़्फ़ार के पोतो! इनका रास्ता छोड़ दो, रास्ता छोड़दो कि सारी भलाई उसके पैग़म्बर ही में है। रहमान ने अपनी तंज़ील को उतारा है, यानी अपनी किताबों में जिनकी तिलावत उसके पैग़म्बर पर की जाती है। ऐ पालनहार! मैं इनकी बात पर ईमान रखता हूं और इसे क़ुबूल करने को ही हक़ जानता हूं कि बेहतरीन क़त्ल वह है जो अल्लाह की राह में हो। आज हम उसकी तंज़ील के मुताबिक़ तुम्हें ऐसी मार मारेंगे कि खोपड़ी अपनी जगह से छटक जाएगी और दोस्त को दोस्त से बेख़बर कर देगी।'[2]

हज़रत अनस रज़ि० की रिवायत में इसका भी ज़िक्र है कि इस पर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने कहा, ऐ इब्ने रुवाहा! तुम अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने और अल्लाह के हरम में कविता कर रहे हो?

नबी सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उमर! इन्हें रहने दो। क्योंकि यह इनके अन्दर तीर की मार से भी ज़्यादा तेज़ है।[3]

अल्लाह के रसूल सल्ल० और मुसलमानों ने तीन चक्कर दौड़कर लगाए। मुश्रिकों ने देखा तो कहने लगे, ये लोग जिनके बारे में हम समझ रहे थे कि बुख़ार ने इन्हें तोड़ दिया है, ये तो ऐसे और ऐसे लोगों से भी ज़्यादा ताक़तवर हैं।[4]

---

1. सहीह बुख़ारी 1/218, 2/610, 611, सहीह मुस्लिम 1/412
2. रिवायतों में इन पदों पर इनके क्रम में बड़ा मतभेद है। हमने विभिन्न पदों को इकट्ठा कर दिया।
3. जामेअ तिर्मिज़ी, अबवाबुल इस्तीज़ान वल अदब, बाब मा जा-अ फ़ी इन शाइश-शेर 2/107
4. सहीह मुस्लिम 1/412

तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर आपने सफ़ा और मर्वः की सई की। उस वक़्त आपकी हदयि यानी क़ुरबानी के जानवर मर्वः के पास खड़े थे। आपने ने सई से फ़ारिग़ होकर फ़रमाया, यह क़ुरबानगाह है और मक्के की सारी गलियां क़ुरबानगाह हैं। इसके बाद मर्वः (ही) के पास जानवरों को क़ुरबान कर दिया, फिर वहीं सर मुंडाया, मुसलमानों ने भी ऐसा ही किया, इसके बाद कुछ लोगों को याजिज भेज दिया गया कि वे हथियारों की हिफ़ाज़त करें और जो लोग हिफ़ाज़त पर लगे हुए थे, वे आकर अपना उमरा अदा कर लें।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में तीन दिन ठहरे रहे। चौथे दिन सुबह हुई तो मुश्रिकों ने हज़रत अली रज़ि० के पास आकर कहा, 'अपने साहब से कहो कि हमारे यहां से रवाना हो जाएं, क्योंकि मुद्दत गुज़र चुकी है। इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का से निकल आए और सर्फ़ नामी जगह पर उतरकर क़ियाम फ़रमाया—

मक्का से आपके रवाना होने के वक़्त पीछे-पीछे हज़रत हमज़ा रज़ि० की सुपुत्री भी चचा, चचा पुकारते हुए आ गईं। उन्हें हज़रत अली रज़ि० ने ले लिया। इसके बाद हज़रत अली, हज़रत जाफ़र और हज़रत ज़ैद के बीच उनके बारे में मतभेद उठ खड़ा हुआ। हर एक दावेदार था कि वही उनकी परवरिश का ज़्यादा हक़दार है। नबी सल्ल० ने हज़रत जाफ़र के हक़ में फ़ैसला किया, क्योंकि उस बच्ची की ख़ाला उन्हीं के घर में थीं।

इस उमरे में नबी सल्ल० ने हज़रत मैमूना बिन्त हारिस आमिरीया रज़ि० से विवाह किया। इस मक़्सद के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मक्का पहुंचने से पहले हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० को अपने आगे हज़रत मैमूना के पास भेज दिया था और उन्होंने अपना मामला हज़रत अब्बास को सौंप दिया था। चूंकि हज़रत मैमूना की बहन हज़रत उम्मुल फ़ज़्ल उन्हीं की बीवी थीं। हज़रत अब्बास रज़ि० ने हज़रत मैमूना (रज़ि०) की शादी नबी सल्ल० से कर दी। फिर आपने मक्का से वापसी के वक़्त हज़रत राफ़ेअ को पीछे छोड़ दिया कि वह हज़रत मैमूना को सवार करके आपकी सेवा में ले आएं। चुनांचे आप सरफ़ पहुंचे तो वह आपकी सेवा में पहुंचा दी गईं।[1]

इस उमरे का नाम उमरा क़ज़ा या तो इसलिए पड़ा कि यह उमरा हुदैबिया की क़ज़ा के तौर पर था, या इसलिए कि यह उमरा हुदैबिया में तै किए हुए समझौते के मुताबिक़ किया गया था (और इस तरह के समझौते को अरबी में

---

1. ज़ादुल मआद 2/152

क़ज़ा और मुक़ाज़ात कहते हैं) इस दूसरी वजह को शोधकों ने तर्जीह के क़ाबिल क़रार दिया है।[1]

साथ ही इस उमरे को चार नामों से याद किया जाता है—उमरा क़ज़ा, उमरा क़जीया, उमरा क़सास और उमरा सुलह।[2]

---

1. ज़ादुल मआद 2/172, फ़त्हुल बारी 7/500
2. वही, फ़त्हुल बारी 7/500

# कुछ और सराया

## 1. सरीया अबुल औजा (ज़िलहिज्जा 07 हि०)

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने पचास आदमियों को हज़रत अबुल औजा के नेतृत्व में बनू सुलैम को इस्लाम की दावत देने के लिए रवाना किया, लेकिन जब बनू सुलैम को इस्लाम की दावत दी गई, तो उन्होंने जवाब में कहा कि तुम जिस बात की दावत देते हो, हमें इसकी कोई ज़रूरत नहीं। फिर उन्होंने सख़्त लड़ाई की जिसमें अबुल औजा घायल हो गए, फिर भी मुसलमानों ने दुश्मन के दो आदमी क़ैद किए।

## 2. सरीया ग़ालिब बिन अब्दुल्लाह (सफ़र सन् 08 हि०)

इन्हें दो सौ आदमियों के साथ फ़िदक के आस-पास में हज़रत बशीर बिन साद के साथियों की शहादतगाह में भेजा गया था। इन लोगों ने दुश्मन के जानवरों पर क़ब्ज़ा किया और इनके कई लोग क़त्ल किए।

## 3. सरीया ज़ातु अतलह (रबीउल अव्वल सन् 08 हि०)

इस सरीया की तफ़्सील यह है कि बनू क़ुज़ाआ ने मुसलमानों पर हमला करने के लिए बड़ा जत्था जुटा रखा था। अल्लाह के रसूल सल्ल० को मालूम हुआ तो आपने काब बिन उमैर रज़ि० के नेतृत्व में सिर्फ़ पन्द्रह सहाबा किराम को उनकी तरफ़ रवाना फ़रमाया। सहाबा किराम ने सामना होने पर उन्हें इस्लाम की दावत दी, पर उन्होंने इस्लाम क़ुबूल करने के बजाए सहाबा को तीरों से छलनी करके सबको शहीद कर डाला, सिर्फ़ एक आदमी ज़िन्दा बचा जो क़त्ल किए गए लोगों के दर्मियान से उठा लाया गया।[1]

## 4. सरीया ज़ाते अर्क़ (रबीउल अव्वल सन् 08 हि०)

इसकी घटना यह है कि बनू हवाज़िन ने बार-बार दुश्मनों को कुमक पहुंचाई थी, इसलिए 25 आदमियों की कमान देकर हज़रत शुजाअ बिन वह्ब असदी रज़ि० को उनकी ओर रवाना किया गया। ये लोग दुश्मन के जानवर हांक लाए, लेकिन लड़ाई और छेड़छाड़ की नौबत नहीं आई।[2]

---

1. रहमतुल लिल आलमीन 2/231
2. वही, व तलक़ीहुल फ़हूम, पृ० 3 (टिप्पणी)

# मूता की लड़ाई

मूता जार्डन में बलक़ा के क़रीब एक आबादी का नाम है, जहां से बैतुल-मक़्दिस दो मंज़िल पर है। मूता की लड़ाई यहीं हुई थी।

यह सबसे बड़ी ख़ूनी लड़ाई थी जो मुसलमानों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० की मुबारक ज़िंदगी में लड़ी, और यही लड़ाई ईसाई देशों की जीत का आरंभ-बिन्दु बनी। इसके होने का समय जुमादल ऊला सन् 08 हि० मुताबिक़ अगस्त या सितम्बर सन् 629 ई० है।

## लड़ाई की वजह

इस लड़ाई की वजह यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हारिस बिन उमैर अज़्दी रज़ि० को अपना पत्र देकर बुसरा के हाकिम के पास रवाना किया, तो उन्हें क़ैसर रूम के गवर्नर शुरहबील बिन अम्र ग़स्सानी ने जो बलक़ा पर नियुक्त था, गिरफ़्तार कर लिया और मज़बूती के साथ बांधकर उनकी गरदन मार दी।

याद रहे कि दूतों की हत्या सबसे बुरा और घिनौना अपराध था जो लड़ाई के एलान जैसा, बल्कि उससे भी बढ़कर समझा जाता था, इसलिए जब अल्लाह के रसूल सल्ल० को इस घटना की सूचना दी गई तो आपको यह बात बड़ी बोझ हुई और आपने उस इलाक़े पर सैनिक कार्रवाई के लिए तीन हज़ार की फ़ौज तैयार की।[1] और यह सबसे बड़ी इस्लामी फ़ौज थी जो इससे पहले अहज़ाब की लड़ाई के अलावा किसी और लड़ाई में न जुटाई जा सकी थी।

## फ़ौज के सरदार और अल्लाह के रसूल सल्ल० की वसीयत

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इस सेना का सेनापति हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को मुक़र्रर किया और फ़रमाया कि अगर ज़ैद क़त्ल कर दिए जाएं तो जाफ़र और जाफ़र क़त्ल कर दिए जाएं तो अब्दुल्लाह बिन रुवाहा सेनापति होंगे।[2] आपने फ़ौज के लिए झंडा बांधा और उसे हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० के हवाले किया।

---

1. ज़ादुल मआद 2/155, फ़त्हुल बारी 7/511
2. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा मूता मिन अरज़िशाम 2/611

फ़ौज को आपने यह वसीयत फ़रमाई कि जिस जगह हज़रत हारिस बिन उमैर रज़ि० क़त्ल किए गए थे, वहां पहुंचकर उस जगह के रहने वालों को इस्लाम की दावत दें। अगर वे इस्लाम क़ुबूल कर लें तो बेहतर, वरना अल्लाह से मदद मांगें और लड़ाई करें।

आपने फ़रमाया कि अल्लाह के नाम से, अल्लाह की राह में अल्लाह के साथ कुफ़्र करने वालों से ग़ज़वा करो और देखो बद-अह्दी न करना, ख़ियानत न करना, किसी बच्चे और औरत और फ़ना के क़रीब पहुंचे बूढ़े को और गिरजा में रहने वाले सन्यासी को क़त्ल न करना, खजूर और कोई और पेड़ न काटना और किसी इमारत को न ढाना।[1]

## इस्लामी फ़ौज की रवानगी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा का रोना

जब इस्लामी फ़ौज रवानगी के लिए तैयार हो गई तो लोगों ने आ-आकर अल्लाह के रसूल सल्ल० के मुक़र्रर किए गए सेनापतियों को विदाई दी और सलाम किया। उस वक़्त एक सेनापति हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० रोने लगे।

लोगों ने कहा, आप क्यों रो रहे हैं?

उन्होंने कहा, देखो, ख़ुदा की क़सम! (इसकी वजह) दुनिया की मुहब्बत या तुम्हारे साथ मेरा ताल्लुक़ नहीं है, बल्कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को अल्लाह की किताब की एक आयत पढ़ते हुए सुना है, जिसमें जहन्नम का उल्लेख है। आयत यह है—

'तुममें से हर व्यक्ति जहन्नम पर पहुंचने वाला है। यह तुम्हारे रब पर एक ज़रूरी और फ़ैसला की हुई बात है।' (19 : 17)

मैं नहीं जानता कि जहन्नम पर पहुंचने के बाद कैसे पलट सकूंगा?

मुसलमानों ने कहा, अल्लाह सलामती के साथ आप लोगों का साथी हो, आपकी ओर से प्रतिरक्षा करे और आपको हमारी ओर नेकी और ग़नीमत के साथ वापस लाए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा ने कहा—

'लेकिन मैं रहमान से मग़्फ़िरत का और हड्डियों को तोड़ने वाली, भेजा निकाल लेनेवाली तलवार की काट का या किसी नेज़ेबाज़ के हाथों, आंतों और

---

1. मुख़्तसरुस्सीरः लेख, शेख़ अब्दुल्लाह पृ० 327, यह हदीस घटना का उल्लेख किए बिना सहीह मुस्लिम, सुनने अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा आदि भिन्न-भिन्न शब्दों में रिवायत की गई है।

जिगर के पार उतर जाने वाले नेज़े की चोट का सवाल करता हूं ताकि जब लोग मेरी क़ब्र पर गुज़रें, तो कहें हाय वह ग़ाज़ी, जिसे अल्लाह ने हिदायत दी और जो हिदायत पाया हुआ रहा।'

इसके बाद फ़ौज रवाना हुई। अल्लाह के रसूल सल्ल० उसके साथ चलते हुए सनीयतुल विदाअ तक गए और वहीं उसे विदा किया।[1]

## इस्लामी फ़ौज आगे बढ़ी और ख़ौफ़नाक हालत सामने आई

इस्लामी फ़ौज उत्तर की ओर बढ़ती हुई मआन पहुंची। यह जगह उत्तरी हिजाज़ से मिले हुए शामी (जोर्डनी) इलाक़े में वाक़े हैं। यहां फ़ौज ने पड़ाव डाला और यहीं जासूसों ने ख़बर दी कि हिरक़्ल क़ैसर रूम बलक़ा के क्षेत्र में मआब नामी जगह पर एक लाख रूमियों की फ़ौज लेकर पड़ाव डाले पड़ा है और उसके झंडे तले लख़्म व जज़ान, बिलक़ीन व बहरा और बली (अरब क़बीले) के और एक लाख लोग जमा हो गए हैं।

## मआन में मज्लिसे शूरा

मुसलमानों के हिसाब में सिरे से यह बात थी ही नहीं कि उन्हें किसी ऐसी भारी सेना से मुक़ाबला करना पड़ेगा जिससे वे बहुत दूर की धरती पर एकदम अचानक दो चार हो गए थे। अब उनके सामने सवाल यह था कि तीन हज़ार की थोड़ी सी फ़ौज दो लाख के ठाठों मारते हुए समुद्र से टकरा जाए या क्या करे?

मुसलमान हैरान थे और इसी हैरानी में मआन के अन्दर दो रातें ग़ौर और मश्विरा करते हुए गुज़ार दीं। कुछ लोगों का विचार था कि हम अल्लाह के रसूल सल्ल० को लिखकर दुश्मन की तायदाद की ख़बर दें। इसके बाद या तो अपकी ओर से और कुमक मिलेगी या और कोई हुक्म मिलेगा और उसका पालन किया जाएगा।

लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस राय का विरोध किया और यह कहकर लोगों को गरमा दिया कि लोगो! ख़ुदा की क़सम! जिस चीज़ से आप कतरा रहे हैं, यह तो वही शहादत है जिसकी तलब में आप निकले हैं। याद रहे दुश्मन से हमारी लड़ाई तायदाद, ताक़त और सामान के बल पर नहीं है, बल्कि हम केवल उस दीन के बल पर लड़ते हैं, जिसे अल्लाह ने हमें दिया है। इसलिए चलिए, आगे बढ़िए। हमें दो भलाइयों में से एक भलाई हासिल होकर रहेगी। या तो हम ग़ालिब आएंगे या हमें शहादत नसीब होगी। आख़िर में हज़रत

1. इब्ने हिशाम 2/373, 374, ज़ादुल मआद 2/156,

अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० की पेश की हुई बात तै पा गई।

## दुश्मन की ओर इस्लामी फ़ौज का आगे बढ़ना

ग़रज़ इस्लामी फ़ौज ने मआन में दो रातें गुजारने के बाद दुश्मन की ओर बढ़ना शुरू किया और बलक़ा की एक बस्ती में, जिसका नाम मशारिफ़ था, हिरक़्ल की फ़ौजों से उसका सामना हुआ। इसके बाद दुश्मन और ज़्यादा क़रीब आ गया और मुसलमानों ने 'मूता' की ओर सिमट कर पड़ाव डाल दिया, फिर फ़ौज की जंगी तर्तीब क़ायम की गई। दाएं हिस्से में क़ुतबा बिन क़तादा अज़्री मुक़र्रर किए गए और बाएं हिस्से में उबादा बिन मालिक अंसारी रज़ि०।

## लड़ाई की शुरुआत और सेनापतियों का एक के बाद एक शहीद होना

इसके बाद मूता ही में दोनों फ़रीक़ों के बीच टकराव हुआ और बड़ी तेज़ लड़ाई शुरू हुई। तीन हज़ार की नफ़री दो लाख के टिड्डी दल के तूफ़ानी हमलों का मुक़ाबला कर रही थी। अनोखी लड़ाई थी, दुनिया फटी-फटी आंखों से देख रही थी, लेकिन जब ईमान की ठंडी हवा चलती है तो इसी तरह की अनोखी बातें ज़ाहिर होती हैं।

सबसे पहले अल्लाह के रसूल सल्ल० के चहेते हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० ने झंडा लिया और ऐसी बहादुरी से लड़े कि इस्लामी योद्धाओं के अलावा कहीं और उसकी मिसाल नहीं मिलती। वह लड़ते रहे, लड़ते रहे, यहां तक कि दुश्मन के नेज़ों में गुथ गए और शहीद होकर धरती पर आ रहे।

इसके बाद हज़रत जाफ़र रज़ि० की बारी थी। उन्होंने लपककर झंडा उठाया और बे-मिसाल लड़ाई शुरू कर दी। जब लड़ाई की तेज़ी चरम सीमा को पहुंची तो अपने लाल और काले घोड़े की पीठ से कूद पड़े, कूचें काट दीं और वार पर वार करते और रोकते रहे, यहां तक कि दुश्मन की चोट से दाहिना हाथ कट गया, इसके बाद उन्होंने झंडा बाएं हाथ में ले लिया और उसको बराबर उठाए रखा, यहां तक कि बायां हाथ भी काट दिया गया, फिर दोनों बाक़ी बाज़ुओं से झंडा गोद में ले लिया और उस वक़्त तक ऊंचा उठाए रखा, जब तक कि शहीद नहीं हो गए। कहा जाता है कि एक रूमी ने उनको ऐसी तलवार मारी कि उनके दो टुकड़े हो गए। अल्लाह ने उन्हें उनके दोनों बाज़ुओं के बदले जन्नत में दो बाज़ू अता किए, जिनके ज़रिए वह जहां चाहते हैं, उड़ते हैं, इसीलिए उनकी उपाधि जाफ़र तैयार और जाफ़र ज़ुल जनाहैन पड़ गया। (तैयार का अर्थ है उड़ने वाला और ज़ुल जनाहैन यानी दो बाज़ुओं वाला)

इमाम बुख़ारी ने नाफ़ेअ के वास्ते से इब्ने उमर रज़ि० का यह बयान रिवायत किया है कि मैंने मूता की लड़ाई के दिन हज़रत जाफ़र के पास जबकि वह शहीद हो चुके थे, खड़े होकर उनके जिस्म पर नेज़े और तलवार के पचास घाव गिने, उनमें से कोई भी घाव पीछे नहीं लगा था।[1]

एक दूसरी रिवायत में इब्ने उमर रज़ि० का यह बयान इस तरह रिवायत किया गया है कि मैं भी इस ग़ज़्वे में मुसलमानों के साथ था। हमने जाफ़र बिन अबी तालिब को खोजा तो उन्हें क़त्ल किए गए लोगों में पाया और उनके जिस्म में नेज़े और तीर के नव्वे से ज़्यादा घाव पाए।[2] नाफ़ेअ ने उमरी की रिवायत में इतनी और वृद्धि है कि हमने ये सब घाव उनके जिस्म के अगले हिस्से में पाए।[3]

इस तरह की वीरता से भरपूर लड़ाई के बाद जब हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु भी शहीद कर दिए गए तो अब हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० ने झंडा उठाया और अपने घोड़े पर सवार आगे बढ़े और अपने आपको मुक़ाबले के लिए तैयार करने लगे, लेकिन उन्हें कुछ संकोच हुआ, कुछ झिझके भी, लेकिन इसके बाद कहने लगे—

'ऐ नफ़्स! क़सम है कि तू ज़रूर मुकाबले में उतर, चाहे नागवारी के साथ, चाहे ख़ुशी-ख़ुशी। अगर लोगों ने लड़ाई छेड़ रखी है और नेज़े तान रखे हैं, तो मैं तुझे क्यों जन्नत से हटा हुआ देख रहा हूं।'

इसके बाद वे मुक़ाबले में उतर आए। इतने में उनका चचेरा भाई एक गोश्त लगी हुई हड्डी ले आया और बोला, इसके ज़रिए अपनी पीठ मज़बूत कर लो, क्योंकि इन दिनों तुम्हें कड़े हालात से दो चार होना पड़ा है। उन्होंने हड्डी लेकर एक बार नोची, फिर फेंककर तलवार थाम ली और आगे बढ़कर लड़ते- लड़ते शहीद हो गए।

## झंडा, अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार के हाथ में

इस मौक़े पर क़बीला बनू अजलान के साबित बिन अरक़म नामी एक सहाबी ने लपककर झंडा उठा लिया और फ़रमाया, मुसलमानो! अपने किसी आदमी को सेनापति बना लो।

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़्वा मूता मिन अर्ज़ि शाम 2/611
2. वही, 2/611
3. फ़त्हुल बारी 7/512, ज़ाहिर में तो दोनों हदीस में तायदाद का मतभेद है। दोनों में मेल यह किया गया है कि तीरों के घाव शामिल करके तायदाद बढ़ जाती है। (देखिए फ़त्हुल बारी)

सहाबा ने कहा, आप ही यह काम अंजाम दें।

उन्होंने कहा, मैं यह काम नहीं कर सकूंगा।

इसके बाद सहाबा ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को चुना और उन्होंने झंडा लेते ही बड़ी ज़ोरदार लड़ाई शुरू कर दी। चुनांचे सहीह बुख़ारी में ख़ुद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० से रिवायत है कि मूता की लड़ाई के दिन मेरे हाथ में नौ तलवारें टूट गईं। फिर मेरे हाथ में सिर्फ़ एक यमनी बाना (छोटी-सी तलवार) बाक़ी बचा।[1]

और एक दूसरी रिवायत में उनका बयान इस तरह आता है कि मेरे हाथ में मूता की लड़ाई के दिन नौ तलवारें टूट गईं और एक यमनी बाना मेरे हाथ में चिपककर रह गया।[2]

इधर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मूता की लड़ाई ही के दिन, जबकि अभी लड़ाई के मैदान से किसी क़िस्म की ख़बर नहीं आई थी, वह्य की बुनियाद पर फ़रमाया कि झंडा ज़ैद ने लिया और वह शहीद कर दिए गए। फिर जाफ़र ने लिया, वह भी शहीद कर दिए गए, फिर इब्ने रुवाहा ने लिया और वह भी शहीद कर दिए गए। इस बीच आंखों में आंसू भर आए थे, यहां तक कि झंडा अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार ने लिया (और ऐसी लड़ाई लड़ी कि) अल्लाह ने उन पर विजय दिला दी।[3]

## लड़ाई का अन्त

बड़ी बहादुरी, वीरता और ज़बरदस्त जांबाज़ी के बावजूद यह बात बड़ी आश्चर्य में डालने वाली थी कि मुसलमानों की यह छोटी-सी फ़ौज रूमियों की उस भारी सेना की तूफ़ानी लहरों के सामने डटी रह जाए, इसलिए इस नाज़ुक मरहले में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने मुसलमानों को इस भंवर से निकालने के लिए, जिसमें वे ख़ुद कूद पड़े थे, अपनी निपुणता दिखाई।

रिवायतों में बड़ा मतभेद है कि इस लड़ाई का आख़िरी अंजाम क्या हुआ। तमाम रिवायतों पर नज़र डालने से स्थिति यह मालूम होती है कि लड़ाई के पहले दिन हज़रत ख़ालिद बिन वलीद दिन भर रूमियों के मुक़ाबले में डटे रहे, लेकिन

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा मूता मिन अर्ज़ि शाम 2/611
2. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा मूता मिन अर्ज़ि शाम 2/611
3. वही, 2/611

वह एक ऐसी जंगी चाल की ज़रूरत महसूस कर रहे थे जिसके ज़रिए रूमियों पर रौब डालकर इतनी कामियाबी के साथ मुसलमानों को पीछे हटा लें कि रूमियों को पीछा करने की हिम्मत न हो, क्योंकि वह जानते थे कि अगर मुसलमान भाग खड़े हुए और रूमियों ने पीछा शुरू किया, तो मुसलमानों को उनके पंजे से बचाना बहुत कठिन होगा।

चुनांचे जब दूसरे दिन सुबह हुई तो उन्होंने फ़ौज की शक्ल और ढांचा बदल दिया और उसकी एक नई तर्तीब क़ायम की। अगली लाइन को पिछली लाइन और पिछली लाइन को अगली लाइन की जगह रख दिया और दाहिनी लाइन को बाईं से और बाईं को दाहिनी से बदल दिया। यह स्थिति देखकर दुश्मन चौंक गया और कहने लगा कि इन्हें कुमक पहुंच गई है, ग़रज़ रूमी शुरू ही में रौब खा गए।

उधर जब फ़ौजों का आमना-सामना हुआ और कुछ देर तक झड़प हो चुकी, तो हज़रत ख़ालिद ने अपनी फ़ौज की व्यवस्था सुरक्षित रखते हुए मुसलमानों को थोड़ा-थोड़ा पीछे हटाना शुरू किया, लेकिन रूमियों ने इस डर से उनका पीछा न किया कि मुसलमान धोखा दे रहे हैं और कोई चाल चलकर उन्हें जंगल की समाइयों में फेंक देना चाहते हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि दुश्मन अपने इलाक़े में वापस चला गया और मुसलमानों का पीछा करने की बात न सोची। इधर मुसलमान कामियाबी और सलामती के साथ पीछे हटे और फिर मदीना वापस आ गए।[1]

## दोनों फ़रीक़ के मारे गए लोग

इस लड़ाई में 12 मुसलमान शहीद हुए। रूमियों के मारे गए लोगों का पता न चल सका, अलबत्ता लड़ाई का विवरण बताता है कि वे बड़ी तादाद में मारे गए। अन्दाज़ा किया जा सकता है कि जब तंहा हज़रत ख़ालिद के हाथ में नौ तलवारें टूट गईं तो मारे जाने वालों और घायलों की तायदाद कितनी रही होगी?

## इस लड़ाई का प्रभाव

इस लड़ाई की तेज़ी, जो बदले के लिए झेली गई थीं, मुसलमान अगरचे वह

1. देखिए फ़त्हुल बारी 7/513, 514, ज़ादुल मआद 2/156, लड़ाई का विस्तृत विवेचन पिछले स्रोतों के साथ इन दोनों स्रोतों से भी लिया गया है।

बदला न ले सके, लेकिन इस लड़ाई ने मुसलमानों की साख और शोहरत में बड़ी वृद्धि की। इसकी वजह से सारे अरब ने दांतों तले उंगली दबा ली, क्योंकि रूमी उस वक़्त धरती की सबसे बड़ी ताक़त थे। अरब समझते थे कि उनसे टकराना आत्महत्या से कम नहीं है, इसलिए तीन हज़ार की तायदाद का दो लाख की भारी भरकम फ़ौज से टकराकर कोई उल्लेखनीय हानि उठाए बिना वापस आ जाना कुछ कम आश्चर्य की बात न थी।

इससे यह सच्चाई भी बड़े पक्के सबूत के साथ सामने आ गई कि अरब अब तक जिस क़िस्म के लोगों को जानते थे, मुसलमान उनसे अलग-थलग एक दूसरी ही क़िस्म के लोग हैं। उनको अल्लाह की ताईद और मदद हासिल है और उनके रहनुमा वाक़ई अल्लाह के रसूल हैं। इसीलिए हम देखते हैं कि वे ज़िद्दी क़बीले जो मुसलमानों से बराबर लड़ते रहते थे, इस लड़ाई के बाद वे इस्लाम की ओर झुक गए, चुनांचे बनू सुलैम, अशजअ, ग़तफ़ान, ज़िबयान और फ़ज़ारा वग़ैरह क़बीलों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

यही लड़ाई है, जिसमें रूमियों के साथ ख़ूनी टक्कर हुई थी, जो आगे चलकर रूमी देशों की जीतों और दूर-दूर के इलाक़ों पर मुसलमानों की सत्ता का आरंभ-बिन्दु साबित हुई।

## सरीया ज़ातुस्सलासिल

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० को मूता की लड़ाई के सिलसिले में मशारिफ़े शाम के अन्दर रहने वाले अरब क़बीलों के दृष्टिकोणों का ज्ञान हुआ कि वे मुसलमानों से लड़ने के लिए रूमियों के झंडे तले जमा हो गए थे, तो आपने एक ऐसी रणनीति की ज़रूरत महसूस की, जिसके ज़रिए एक ओर तो इन अरब क़बीलों और रूमियों के बीच फूट पड़ जाए और दूसरी ओर ख़ुद मुसलमानों से उनकी दोस्ती हो जाए, ताकि उस इलाक़े में दोबारा आपके ख़िलाफ़ इतना बड़ा जत्था जमा न हो सके।

इस मक़्सद के लिए आपने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को चुना, क्योंकि उनकी दादी क़बीला बलि से ताल्लुक़ रखती थीं। चुनांचे आपने मूता की लड़ाई के बाद ही यानी जुमादल आख़िर सन् 08 हि० में उनका दिल रखने के लिए हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० को उनकी ओर रवाना फ़रमाया।

कहा जाता है कि जासूसों ने यह सूचना भी दी थी कि बनू क़ुज़ाआ ने मदीना के चारों तरफ़ हल्ला बोलने के इरादे से एक टुकड़ी बनाई थी, इसलिए आपने हज़रत अम्र बिन आस को उनकी ओर रवाना किया। संभव है दोनों

वजहें जमा हो गई हों।

बहरहाल अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत अम्र बिन आस के लिए सफ़ेद झंडा बांधा और उसके साथ काली झंडियां भी दीं और उनकी कमान में बड़े-बड़े मुहाजिरों और अंसार की तीन सौ नफ़री देकर उन्हें विदा किया। उनके साथ तीस घोड़े भी थे। आपने हुक्म दिया कि बली और अज़्रा और बिलक़ीन के जिन लोगों के पास से गुज़रें, उनसे मदद चाहें। वे रात को सफ़र करते और दिन को छिपते रहते थे। जब दुश्मन के क़रीब पहुंचे तो मालूम हुआ, उनका जत्था बहुत बड़ा है इसलिए हज़रत राफ़ेअ बिन मुकैस जुहनी को कुमक तलब करने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेज दिया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह को झंडा देकर उनकी सरदारी में दो सौ फ़ौजियों की कुमक रवाना फ़रमाई, जिसमें मुहाजिरों के बड़े, जैसे अबूबक्र और उमर, और अंसार के सरदार भी थे। हज़रत अबू उबैदा रज़ि० को हुक्म दिया गया कि अम्र बिन आस से जा मिलें और दोनों मिलकर काम करें, मतभेद न करें। वहां पहुंचकर अबू उबैदा रज़ि० ने इमामत करनी चाही, लेकिन हज़रत अम्र ने कहा, आप मेरे पास कुमक के तौर पर आए हैं। सरदार मैं हूं, अबू उबैदा ने उनकी बात मान ली और नमाज़ हज़रत अम्र ही पढ़ाते रहे।

कुमक आ जाने के बाद यह फ़ौज और आगे बढ़कर क़ुज़ाआ के इलाक़े में दाख़िल हुई और उस इलाक़े को रौंदती हुई उसकी दूर-दूर की हदों में जा पहुंची। अन्त में एक फ़ौज से लड़ाई हुई, लेकिन जब मुसलमानों ने उस पर हमला किया तो वह इधर-उधर भाग कर बिखर गई।

इसके बाद औफ़ बिन मालिक अशजई रज़ि० को दूत बनाकर अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में भेजा गया। उन्होंने मुसलमानों की सलामती के साथ वापसी की ख़बर दी और ग़ज़वे का विवरण दिया।

ज़ातुस्सलासिल वादिल क़ुरा से आगे एक भू-भाग का नाम है। यहां से मदीना का फ़ासला दस दिन है। इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि मुसलमान क़बीला जज़ाम की धरती पर स्थित सलसल नामी एक सोते पर उतरे थे। इसलिए इस मुहिम का नाम ज़ातुस्सलासिल पड़ गया।[1]

---

1. देखिए इब्ने हिशाम, 2/623-626, ज़ादुल मआद 2/157

## सरीया ख़ज़रा (शाबान 08 हि०)

इस सरीया की वजह यह थी कि नज्द के अन्दर क़बीला मुहारिब के इलाक़े में ख़ज़रा नामी एक जगह पर बनू ग़तफ़ान फ़ौज जमा कर रहे थे, इसलिए उनका सर कुचलने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू क़तादा को पन्द्रह आदमियों का जत्था देकर रवाना किया। उन्होंने दुश्मन के कई आदमियों को क़त्ल और क़ैद किया और ग़नीमत का माल भी हासिल किया। इस मुहिम में वह पन्द्रह दिन मदीना से बाहर रहे।[1]

---

1. तल्क़ीहुल फ़हूम, पृ० 33

# मक्का की विजय

इमाम इब्ने क़य्यिम लिखते हैं कि यह वह महान विजय है जिसके ज़रिए अल्लाह ने अपने दीन को, अपने रसूल को अपनी सेना को और अपने अमानतदार गिरोह को सम्मान दिया और अपने शहर को, अपने घर को, जिसे दुनिया वालों के लिए हिदायत का ज़रिया बनाया, कुफ़्फ़ार और मुश्रिक के हाथों से छुटकारा दिलाया। इस विजय से आसमान वालों में ख़ुशी की लहर दौड़ गई, इसकी वजह से लोग अल्लाह के दीन में जत्थ के जत्थ दाख़िल हुए और धरती का चेहरा रोशनी और चमक-दमक से जगमगा उठा।[1]

## इस लड़ाई की वजह

हुदैबिया समझौते के सिलसिले में हम यह बात बता चुके हैं कि इस समझौते की एक धारा यह थी कि जो कोई मुहम्मद सल्ल० के अह्द व पैमान में दाख़िल होना चाहे, दाख़िल हो सकता है और जो कोई क़ुरैश के अह्द व पैमान में दाख़िल होना चाहे, दाख़िल हो सकता है और जो क़बीला जिस फ़रीक़ के साथ शामिल होगा, उस फ़रीक़ का एक हिस्सा समझा जाएगा, इसलिए ऐसा कोई क़बीला अगर किसी हमले या ज़्यादती का शिकार होगा, तो यह ख़ुद उस फ़रीक़ पर हमला और ज़्यादती समझी जाएगी।

इस धारा के अन्तर्गत बनू ख़ुज़ाआ अल्लाह के रसूल सल्ल० के अह्द व पैमान में दाख़िल हो गए और बनू बक्र क़ुरैश के अह्द व पैमान में। इस तरह दोनों क़बीले एक दूसरे से अम्न में और बे-ख़तर हो गए, लेकिन चूंकि इन दोनों क़बीलों में अज्ञानता-युग से दुश्मनी और खिंचाव चला आ रहा था, इसलिए जब इस्लाम का आना हुआ और हुदैबिया समझौता हो गया और दोनों फ़रीक़ एक दूसरे से सन्तुष्ट हो गए तो बनू बक्र ने इस मौक़े को ग़नीमत समझकर चाहा कि बनू ख़ुज़ाआ से पुराना बदला चुका लें।

चुनांचे नौफ़ुल बिन मुआविया वेली ने बनू बक्र की एक जमाअत साथ लेकर शाबान सन् 08 हि० में बनू ख़ुज़ाआ पर रात के अंधेरे में हमला कर दिया। उस वक़्त बनू ख़ुज़ाआ वतीर नामी एक सोते पर पड़ाव डाले हुए थे। उनके बहुत से लोग मारे गए, कुछ झड़प और लड़ाई भी हुई।

उधर क़ुरैश ने इस हमले में हथियारों से बनू बक्र की मदद की, बल्कि उनके

1. ज़ादुल मआद 2/160

कुछ आदमी भी रात के अंधेरे का फ़ायदा उठाकर लड़ाई में शरीक हुए। बहरहाल हमलावरों ने बनू ख़ुज़ाआ को खदेड़कर हरम तक पहुंचा दिया।

हरम में पहुंचकर बनू बक्र ने कहा, ऐ नौफ़ुल ! अब तो हम हरम में दाख़िल हो गए। तुम्हारा इलाह !. . . तुम्हारा इलाह !. . .

इसके जवाब में नौफ़ुल ने एक बड़ी बात कही, बोला, बनू बक्र ! आज कोई इलाह नहीं, अपना बदला चुका लो। मेरी उम्र की क़सम ! तुम लोग हरम में चोरी करते हो, तो क्या हरम में अपना बदला नहीं ले सकते ?

इधर बनू ख़ुज़ाआ ने मक्का पहुंचकर बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाई और अपने एक आज़ाद किए हुए ग़ुलाम राफ़ेअ के घरों में पनाह ली और अम्र बिन सालिम ख़ुज़ाई ने वहां से निकलकर तुरन्त मदीना का रुख किया और अल्लाह के रसूल सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचकर खड़ा हो गया। उस वक़्त आप मस्जिदे नबवी में सहाबा किराम के दर्मियान तशरीफ़ रखते थे। अम्र बिन सालिम ने कहा—

'ऐ परवरदिगार ! मैं मुहम्मद को उनके शहर और उनके वालिद के पुराने अह्द[1] की दुहाई दे रहा हूं। आप लोग औलाद थे और हम जनने वाले।[2] फिर हमने ताबेदारी अख़्तियार की और कभी उससे हाथ न खींचा। अल्लाह आपको हिदायत दे। आप ज़ोरदार मदद कीजिए, और अल्लाह के बन्दों को पुकारिए, वे मदद को आएंगे, जिनमें अल्लाह के रसूल होंगे हथियार बांधे हुए और चढ़े हुए चौदहवीं रात की तरह गोरे और ख़ूबसूरत। अगर उन पर ज़ुल्म और उनकी तौहीन की जाए, तो चेहरा तमतमा उठता है। आप एक ऐसे भारी भरकम फ़ौज के भीतर तशरीफ़ लाएंगे जो झाग भरे समुद्र की तरह मौजें ले रहा होगा। यक़ीनन क़ुरैश ने आपके अह्द को भंग किया है और आपका पक्का पैमान तोड़ दिया है। उन्होंने मेरे लिए कदा में घात लगाई और यह समझा कि मैं किसी को (मदद के लिए) न पुकारूंगा, हालांकि वे बड़े ज़लील और तायदाद में थोड़े हैं। उन्होंने वतीर पर रात में हमला किया और हमें रुकूअ और सज्दे की हालत में क़त्ल किया। (यानी हम मुसलमान थे और हमें क़त्ल किया गया।)'.

---

1. इशारा उस अह्द की ओर है, जो बनू ख़ुज़ाआ और बनू हाशिम के बीच अब्दुल मुत्तलिब के ज़माने से चला आ रहा था। इसका उल्लेख किताब के शुरू में किया जा चुका है।
2. इशारा इस बात की ओर है कि अब्दे मुनाफ़ की मां यानी क़ुसई की बीवी हब्बी बनू ख़ुज़ाआ से थीं। इसलिए नबी सल्ल० का पूरा ख़ानदान बनू ख़ुज़ाआ की औलाद ठहरा।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अम्र बिन सालिम ! तेरी मदद की गई। इसके बाद आसमान में बादल का एक टुकड़ा दिखाई पड़ा। आपने फ़रमाया, यह बादल बनू काब की मदद की ख़ुशख़बरी से दमक रहा है।

इसके बाद बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाई की सरदारी में बनू ख़ुज़ाआ की एक जमाअत मदीना आई और अल्लाह के रसूल सल्ल० को बताया कि कौन से लोग मारे गए और किस तरह क़ुरैश ने बनू बक्र को शह दिया। इसके बाद ये लोग मक्का वापस चले गए।

## समझौते के नवीनीकरण के लिए अबू सुफ़ियान मदीना में

इसमें सन्देह नहीं कि क़ुरैश और उनके मित्रों ने जो कुछ किया था, वह खुली हुई बद-अह्दी और खुली पैमान शिकनी थी, जिसे सही साबित ही नहीं किया जा सकता। इसलिए ख़ुद क़ुरैश को भी अपनी बद-अह्दी का बहुत जल्द एहसास हो गया और उन्होंने उसके अंजाम की संगीनी को नज़र में रखते हुए एक मश्विरे के लिए मज्लिस बुलाई, जिसमें तै किया कि वह अपने सेनापति अबू सुफ़ियान को अपना नुमाइन्दा बनाकर समझौते के नवीनीकरण के लिए मदीना रवाना करें।

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम को बताया कि क़ुरैश अपनी इस अह्द शिकनी के बाद अब क्या करने वाले हैं। चुनांचे आपने फ़रमाया कि 'गोया मैं अबू सुफ़ियान को देख रहा हूं कि वह अह्द को फिर से पक्का करने और समझौते की मुद्दत को बढ़ाने के लिए आ गया है।'

उधर अबू सुफ़ियान तैशुदा तज्वीज़ के मुताबिक़ रवाना होकर उस्फ़ान पहुंचा तो बुदैल बिन वरक़ा से मुलाक़ात हुई। बुदैल मदीना से मक्का वापस आ रहा था। अबू सुफ़ियान समझ गया कि यह नबी सल्ल० के पास से होकर आ रहा है, पूछा, बुदैल ! कहां से आ रहे हो ?

बुदैल ने कहा, मैं ख़ुज़ाआ के साथ उस साहिल और वादी में गया था।

पूछा, क्या तुम मुहम्मद सल्ल० के पास नहीं गए थे ?

बुदैल ने कहा, नहीं।

मगर जब बुदैल मक्का की ओर रवाना हुआ, तो अबू सुफ़ियान ने कहा, अगर वह मदीना गया था तो वहां (अपने ऊंट को) गुठली का चारा खिलाया होगा। इसलिए अबू सुफ़ियान उस जगह गया, जहां बुदैल ने अपा ऊंट बिठाया था और उसकी मेंगनी तोड़ी, तो उसमें खजूर की गुठली नज़र आई। अबू सुफ़ियान ने कहा, मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि बुदैल मुहम्मद के पास गया था।

बहरहाल अबू सुफ़ियान मदीना पहुंचा और अपनी सुपुत्री उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० के घर गया। जब अल्लाह के रसूल सल्ल० के बिस्तर पर बैठना चाहा, तो उन्होंने बिस्तर लपेट दिया। अबू सुफ़ियान ने कहा, बेटी! क्या तुमने इस बिस्तर को मेरे लायक़ नहीं समझा?

उन्होंने कहा, यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बिस्तर है और आप नापाक मुश्रिक आदमी हैं।

अबू सुफ़ियान कहने लगा, ख़ुदा की क़सम! मेरे बाद तुम्हें शर (दुष्टताई) पहुंच गया है। फिर अबू सुफ़ियान वहां से निकलकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गया और आपसे बात की। आपने उसे कोई जवाब न दिया। इसके बाद अबूबक्र रज़ि० के पास गया और उनसे कहा कि वह अल्लाह के रसूल सल्ल० से बात करें।

उन्होंने कहा, मैं ऐसा नहीं कर सकता।

इसके बाद वह उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के पास गया और उनसे बात की। उन्होंने कहा, भला, मैं तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० से सिफ़ारिश करूंगा। इसके बाद वह हज़रत अली बिन अबी तालिब के पास पहुंचा। वहां हज़रत फ़ातमा रज़ि० भी थीं और हज़रत हसन भी थे, जो अभी छोटे से बच्चे थे और सामने फुदक-फुदक कर चल रहे थे।

अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ अली! मेरे साथ तुम्हारा सबसे गहरा नसबी ताल्लुक़ है। मैं एक ज़रूरत से आया हूं। ऐसा न हो कि जिस तरह मैं नामुराद आया उसी तरह नामुराद वापस जाऊं। तुम मेरे लिए मुहम्मद से सिफ़ारिश कर दो।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, अबू सुफ़ियान! तुझ पर अफ़सोस! अल्लाह के रसूल सल्ल० ने एक बात का इरादा कर लिया है। हम इस बारे में आपसे कोई बात नहीं कर सकते।

इसके बाद वह हज़रत फ़ातमा रज़ि० की ओर मुतवज्जह हुआ और बोला, क्या आप ऐसा कर सकती हैं कि अपने इस बेटे को हुक्म दें कि वह लोगों के दर्मियान पनाह देने का एलान करके हमेशा के लिए अरब का सरदार हो जाए?

हज़रत फ़ातमा ने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरा बेटा इस दर्जे को नहीं पहुंचा है कि लोगों के बीच पनाह देने का एलान कर सके और अल्लाह के रसूल सल्ल० के होते हुए कोई पनाह दे भी नहीं सकता।

इन कोशिशों और नाकामियों के बाद अबू सुफ़ियान की आंखों के सामने

दुनिया अंधेरी हो गई। उसने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० से बड़ी घबराहट, संघर्ष और निराशा की हालत में कहा कि अबुल हसन! मैं देखता हूं मामला संगीन हो गया है, इसलिए मुझे कोई रास्ता बताओ।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हारे लिए कोई काम की चीज़ नहीं जानता, अलबत्ता तुम बनी कनाना के सरदार हो, इसलिए खड़े होकर लोगों के बीच अमान का एलान कर दो। इसके बाद अपनी धरती पर वापस चले जाओ।

अबू सुफ़ियान ने कहा, क्या तुम्हारा ख़्याल है कि यह मेरे लिए कुछ कारगर होगा?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, नहीं, ख़ुदा की क़सम! मैं इसे कारगर तो नहीं समझता, लेकिन इसके अलावा कोई शक्ल भी तो समझ में नहीं आती।

इसके बाद अबू सुफ़ियान ने मस्जिद में खड़े होकर एलान किया कि लोगो! मैं लोगों के बीच अमान का एलान कर रहा हूं। फिर अपने ऊंट पर सवार होकर मक्का चला गया।

क़ुरैश के पास पहुंचा तो वे पूछने लगे, पीछे का क्या हाल है?

अबू सुफ़ियान ने कहा, मैं मुहम्मद के पास गया, बात की तो अल्लाह की क़सम! उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। फिर अबू क़हाफ़ा के बेटे के पास गया, तो उसके अन्दर कोई भलाई नहीं पाई। इसके बाद उमर बिन ख़त्ताब के पास गया तो उसे सबसे कट्टर दुश्मन पाया। फिर अली के पास गया, तो उसे सबसे नर्म पाया। उसने मुझे एक राय दी और मैंने उस पर अमल भी किया, लेकिन पता नहीं वह कारामद भी है या नहीं?

लोगों ने पूछा, वह क्या राय थी?

अबू सुफ़ियान ने कहा, वह राय यह थी कि मैं लोगों के बीच अमान का एलान कर दूं और मैंने ऐसा ही किया।

क़ुरैश ने कहा, तो क्या मुहम्मद ने उसे लागू क़रार दिया?

अबू सुफ़ियान ने कहा, नहीं।

लोगों ने कहा, तेरी तबाही हो। इस व्यक्ति (अली) ने तेरे साथ मात्र खिलवाड़ किया।

अबू सुफ़ियान ने कहा, ख़ुदा की क़सम! इसके अलावा कोई शक्ल न बन सकी।

## लड़ाई की तैयारी और छिपाने की कोशिश

तबरानी की रिवायत से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने अह्द शिकनी की ख़बर आने से तीन दिन पहले ही हज़रत आइशा रज़ि० को हुक्म दे दिया था कि आपका साज़ व सामान तैयार कर दें, लेकिन किसी को पता न चले। इसके बाद हज़रत आइशा रज़ि० के पास हज़रत अबूबक्र रज़ि० तशरीफ़ लाए, तो पूछा, बेटी! यह कैसी तैयारी है?

उन्होंने कहा, ख़ुदा की क़सम! मुझे नहीं मालूम।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, यह बनू असफ़र यानी रूमियों से लड़ने का वक़्त नहीं। फिर रसूलुल्लाह सल्ल० का इरादा किधर का है?

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! मुझे नहीं मालूम।

तीसरे दिन बहुत सवेरे अम्र बिन सालिम ख़ुज़ाई चालीस सवारों को लेकर पहुंच गया और ऊपर वाले पद 'या रब इन्नी नाशिदुन मुहम्मदन. . . (आख़िर तक) कहा, तो लोगों को मालूम हुआ कि अह्द शिकनी की गई है।

इसके बाद बुदैल आया, फिर अबू सुफ़ियसान आया और लोगों को हालात का ठीक-ठीक पता लग गया। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्ल० ने तैयारी का हुक्म देते हुए बताया कि मक्का चलना है और साथ ही यह दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! जासूसों और ख़बरों को क़ुरैश तक पहुंचने से रोक और पकड़ ले, ताकि हम उनके इलाक़े में उनके सर पर एकदम जा पहुंचें।

फिर पूरे ख़ुफ़िया अन्दाज़ में और राज़दारी की ग़रज़ से रसूलुल्लाह सल्ल० ने शुरू माह रमज़ान में सन् 08 हि० में हज़रत अबू क़तादा बिन रुबई के नेतृत्व में आठ आदमियों का एक सरीया बत्न अज़म की ओर रवाना फ़रमाया। यह जगह ज़ीख़शब और ज़िल मर्वा के बीच मदीना से 36 अरबी मील की दूरी पर वाक़े है। मक़्सद यह था कि समझने वाला समझे कि आप उसी इलाक़े का रुख़ करेंगे और यही ख़बरें इधर-उधर फैलें, लेकिन जब यह सरीया अपनी तैशुदा जगह पहुंच गया, तो उसे मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्ल० मक्का के लिए रवाना हो चुके हैं। चुनांचे यह भी आपसे जा मिला।[1]

---

1. यही सरीया है कि जिसकी मुलाक़ात आमिर बिन अज़बत से हुई, तो आमिर ने इस्लामी तरीक़े से सलाम किया लेकिन मह्लम बिन जसामा ने किसी पिछली रंजिश की वजह से उसे क़त्ल कर दिया, और उसके ऊंट और सामान पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस पर यह आयत उतरी, 'जो तुमसे सलाम करे उसे यह न कहो कि तू ईमान वाला

इधर हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ ने क़ुरैश को एक चिट्ठी लिखकर यह ख़बर भेजी कि अल्लाह के रसूल सल्ल० हमला करने वाले हैं। उन्होंने यह चिट्ठी एक औरत को दी थी और उससे क़ुरैश तक पहुंचाने का मुआवज़ा तै कर रखा था। औरत सर की चोटी में चिट्ठी छिपाकर रवाना हुई। लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० को आसमान से हातिब की इस हरकत की ख़बर दे दी गई। चुनांचे आपने हज़रत अली, हज़रत मिक़्दाद, हज़रत ज़ुबैर और हज़रत अबू मरसद ग़नवी को यह कहकर भेजा कि जाओ रौज़ा ख़ाख़ पहुंचो, वहां एक हौदज पर बैठी औरत मिलेगी, जिसके पास क़ुरैश के नाम एक चिट्ठी होगी, ये लोग घोड़ों पर सवार तेज़ी से रवाना हुए। वहां पहुंचे तो औरत मौजूद थी। उससे कहा कि वह नीचे उतरे और पूछा कि क्या तुम्हारे पास कोई पत्र है?

उसने कहा, मेरे पास कोई पत्र नहीं। उन्होंने उसके कजावे की तलाशी ली, लेकिन कुछ न मिला। इस पर हज़रत अली रज़ि० ने उससे कहा, मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि न रसूलुल्लाह सल्ल० ने झूठ कहा है, न हम झूठ कह रहे हैं। तुम या तो पत्र निकालो या हम तुम्हें नंगा कर देंगे। जब उसने यह इरादा देखा तो बोली अच्छा मुंह फेरो। उन्होंने मुंह फेरा तो उसने चोटी खोलकर पत्र निकाला और उनके हवाले कर दिया।

ये लोग चिट्ठी लेकर अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास पहुंचे, देखा तो उसमें लिखा हुआ था, (हातिब बिन अबी बलतआ की ओर से क़ुरैश की तरफ़) फिर क़ुरैश को रसूलुल्लाह सल्ल० के रवाना होने की ख़बर दी थी।[1]

---

नहीं।' इसके बाद सहाबा किराम मह्लम को रसूलुल्लाह सल्ल० के पास ले आए कि आप इसके लिए मग़्फ़िरत की दुआ करें, लेकिन जब मह्लम आपके सामने हाज़िर हुआ, तो आपने तीन बार फ़रमाया, ऐ अल्लाह! मह्लम को न बख़्श! इसके बाद मह्लम अपने कपड़े के दामन से अपने आंसू पोंछता हुआ उठा। इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि उसकी क़ौम के लोग कहते हैं कि बाद में उसके लिए रसूलुल्लाह सल्ल० ने मग़्फ़िरत की दुआ कर दी थी।

देखिए ज़ादुल मआद 2/150, इब्ने हिशाम 2/625, 627, 628

1. सुहैली ने कुछ लेखकों के हवाले से चिट्ठी में यह लिखा बयान किया है, ऐ क़ुरैश की जमाअत! अल्लाह के रसूल सल्ल० तुम्हारे पास रात जैसी बढ़ती बाढ़ की शक्ल में भारी फ़ौज लेकर आ रहे हैं और ख़ुदा की क़सम, अगर वह अकेले भी तुम्हारे पास आ जाएं, तो अल्लाह उनकी मदद करेगा और उनसे अपना वायदा पूरा करेगा, इसलिए तुम लोग अपने बारे में सोच लो। वस्सलाम

वाक़दी ने अपनी एक मुर्सल सनद से रिवायत किया है कि हज़रत हातिब ने सुहैल

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत हातिब को बुलाकर पूछा कि हातिब ! यह क्या है ?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे ख़िलाफ़ जल्दी न फ़रमाएं। ख़ुदा की क़सम ! अल्लाह और उसके रसूल पर मेरा ईमान है। मैं न तो इस्लाम से विमुख हुआ हूं और न मुझमें तब्दीली आई है। बात सिर्फ़ इतनी है कि मैं ख़ुद क़ुरैश का आदमी नहीं, अलबत्ता उनमें चिपका हुआ था और मेरे बाल-बच्चे वहीं हैं, लेकिन क़ुरैश से मेरी कोई रिश्तेदारी नहीं कि वे मेरे बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करें। इसके ख़िलाफ़ दूसरे लोग जो आपके साथ हैं, वहां उनके रिश्तेदार हैं जो उनकी हिफ़ाज़त करेंगे, इसलिए जब मुझे यह चीज़ हासिल न थी, तो मैंने चाहा कि उन पर एक एहसान कर दूं जिसके बदले में वे मेरे रिश्तेदारों की हिफ़ाज़त करें। इस पर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने कहा,

'ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे छोड़िए, मैं इसकी गरदन मार दूं, क्योंकि इसने अल्लाह और उसके रसूल के साथ ख़ियानत की है और यह मुनाफ़िक़ हो गया है।'

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, देखो, यह बद्र की लड़ाई में शरीक हो चुका है और उमर ! तुम्हें क्या पता ? हो सकता है अल्लाह ने बद्र वालों पर नमूदार होकर कहा है कि तुम लोग जो चाहो, करो, मैं तुम्हें बख़्श दिया। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० की आंखें भीग गईं और उन्होंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं।[1]

इस तरह अल्लह ने जासूसों को पकड़ लिया और मुसलमानों की जंगी तैयारियों की कोई ख़बर क़ुरैश तक न पहुंच सकी।

## इस्लामी फ़ौज मक्का के रास्ते में

10 रमज़ान 08 हि० को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना छोड़कर मक्का का रुख़ किया। आपके साथ दस हज़ार सहाबा किराम थे। मदीना पर अबूज़र गिफ़ारी रज़ि० की नियुक्ति हुई।

---

बिन अम्र, सफ़वान बिन उमैया और इक्रिमा के पास यह लिखा था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों में ग़ज़वे का एलान कर दिया है और मैं नहीं समझता कि आपका इरादा तुम लोगों के सिवा किसी और का है और मैं चाहता हूं कि तुम लोगों पर मेरा एक एहसान रहे। (फ़त्हुल बारी 7/521)

1. सहीह बुख़ारी 1/422, 2/612, हज़रत ज़ुबैर और हज़रत अबू मरसद के नामों में वृद्धि सहीह बुख़ारी की कुछ दूसरी रिवायतों में है।

जोहफ़ा में या इससे कुछ ऊपर आपके चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब मिले। वह मुसलमान होकर अपने बाल-बच्चों समेत हिजरत करते हुए तशरीफ़ ला रहे थे, फिर अबवा में आपके चचेरे भाई अबू सुफ़ियान बिन हारिस और फुफेरे भाई अब्दुल्लाह बिन उमैया मिले। आपने इन दोनों को देखकर मुंह फेर लिया, क्योंकि ये दोनों आपको बहुत कष्ट पहुंचाया करते और आपकी बुराई किया करते थे। ऐसी स्थिति देखकर हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ऐसा नहीं होना चाहिए कि आपके चचेरे और फुफेरे भाई ही आपके यहां सबसे ज़्यादा भाग्यहीन हों।

इधर हज़रत अली रज़ि० ने अबू सुफ़ियान बिन हारिस को सिखाया कि तुम अल्लाह के रसूल सल्ल० के सामने जाओ और वही कहो जो हज़रत यूसुफ़ अलै० के भाइयों ने उनसे कहा था, कि 'ख़ुदा की क़सम! अल्लाह ने आपको हम पर बरतरी दी और यक़ीनन हम ही ख़ताकार थे। (12 : 91) क्योंकि आप यह पसन्द नहीं करेंगे कि किसी और का जवाब आपसे अच्छा रहा हो।

चुनांचे अबू सुफ़ियान ने यही कहा और जवाब में तुरन्त अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, 'आज तुम्हें कोई फटकार नहीं। अल्लाह तुम्हें बख़्श दे और वह तमाम रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है।' इस पर अबू सुफ़ियान ने कुछ पद सुनाए, जिनमें से कुछ ये थे—

'तेरी उम्र की क़सम! जिस वक़्त मैंने इसलिए झंडा उठाया था कि लात के योद्धा मुहम्मद के योद्धाओं पर ग़ालिब आ जाएं, तो मेरी स्थित रात के उस मुसाफ़िर जैसी थी जो अंधेरी घुप रात में हैरान हो, लेकिन अब वक़्त आ गया है कि मुझे हिदायत दी जाए और मैं हिदायत पाऊं। मुझे मेरे नफ़्स की बजाए एक हादी ने हिदायत दी, और अल्लाह का रास्ता उसी व्यक्ति ने बताया जिसे मैंने हर मौक़े पर धुत्कार दिया था।'

यह सुनकर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनके सीने पर मारकर फ़रमाया, तुमने मुझे हर मौक़े पर धुत्कारा था।[1]

---

1. बाद में अबू सुफ़ियान के इस्लाम में बड़ी ख़ूबी आ गई। कहा जाता है, जबसे उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया, शर्म की वजह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर सर उठाकर न देखा, अल्लाह के रसूल सल्ल० भी उनसे मुहब्बत करते थे और उनके लिए जन्नत की ख़ुशख़बरी देते थे, और फ़रमाते थे, मुझे उम्मीद है कि यह हमज़ा का बदल साबित होंगे। जब उनकी मौत का वक़्त आया तो कहने लगे, मुझ पर न रोना, क्योंकि इस्लाम लाने के बाद मैंने कभी कोई गुनाह की बात नहीं कही। ज़ादुल मआद 2/162, 163

## मर्रुज़्ज़हरान में इस्लामी फ़ौज का पड़ाव

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना सफ़र जारी रखा। आप और सहाबा रोज़े से थे लेकिन अस्फ़ान और क़ुदैद के बीच कदीद नामी चश्मे पर पहुंचकर आपने रोज़ा तोड़ दिया।[1] और आपके साथ सहाबा किराम रज़ि० ने भी रोज़ा तोड़ दिया। इसके बाद फिर आपने सफ़र जारी रखा, यहां तक कि रात के शुरू के वक़्तों में मर्रुज़्ज़हरान की वादी फ़ातमा में पहुंचकर पड़ाव डाला। वहां आपके हुक्म से लोगों ने अलग-अलग आग जलाई। इस तरह दस हज़ार (चूल्हों में) आग जलाई गई। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को पहरे पर मुक़र्रर फ़रमाया।

## अबू सुफ़ियान नबी सल्ल० के दरबार में

मर्रुज़्ज़हरान में पड़ाव डालने के बाद हज़रत अब्बास रज़ि० अल्लाह के रसूल सल्ल० के सफ़ेद ख़च्चर पर सवार होकर निकले। उनका मक़्सद यह था कि कोई लकड़हारा या कोई भी आदमी मिल जाए तो उससे क़ुरैश के पास ख़बर भेज दें ताकि वे मक्के में रसूलुल्लाह सल्ल० के दाख़िल होने से पहले आपके पास हाज़िर होकर अमान तलब करें।

इधर अल्लाह ने क़ुरैश पर सारी ख़बरों का पहुंचना रोक दिया था, इसलिए उन्हें हालात का कुछ पता न था, अलबत्ता वे भय और आशंका के शिकार थे और अबू सुफ़ियान बाहर जा-जाकर ख़बरों का पता लगाता रहता था। चुनांचे उस वक़्त भी वह और हकीम बिन हिज़ाम और बुदैल बिन वरक़ा ख़बरों का पता लगाने की ग़रज़ से निकले हुए थे।

हज़रत अब्बास रज़ि० का बयान है कि ख़ुदा की क़सम! मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़च्चर पर सवार जा रहा था कि मुझे अबू सुफ़ियान और बुदैल बिन वरक़ा की आपसी बातें सुनाई दीं। वे आपस ही में कह-सुन रहे थे। अबू सुफ़ियान कह रहा था कि ख़ुदा की क़सम! मैंने आज रात जैसी आग और ऐसी फ़ौज तो कभी देखी ही नहीं और जवाब में बुदैल कह रहा था, ये ख़ुदा की क़सम! बनू ख़ुज़ाआ हैं। लड़ाई ने इन्हें नोच कर रख दिया है और इस पर अबू सुफ़ियान कह रहा था, ख़ुज़ाआ इससे कहीं कमतर और ज़लील हैं कि यह उनकी आग और उनकी फ़ौज हो।

---

1. सहीह बुख़ारी 2/613

हज़रत अब्बास कहते हैं कि मैंने उसकी आवाज़ पहचान ली और कहा, 'अबू हंज़ला?'

उसने भी मेरी आवाज़ पहचान ली और बोला, 'अबुल फ़ज़्ल?'

मैंने कहा, हां।

उसने कहा, क्या बात है? मेरे मां-बाप तुझ पर क़ुर्बान?

मैंने कहा, यह रसूलुल्लाह (सल्ल०) हैं लोगों सहित, हाय क़ुरैश की तबाही! अल्लाह की क़सम!

उसने कहा, अब क्या हीला है? मेरे मां-बाप तुम पर क़ुर्बान!

मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! अगर वे तुम्हें पा गए, तो तुम्हारी गरदन मार देंगे, इसलिए इस ख़च्चर पर पीछे बैठ जाओ। मैं तुम्हें रसूलुल्लाह सल्ल० के पसा ले चलता हूं और तुम्हारे लिए अमान तलब किए देता हूं।

इसके बाद अबू सुफ़ियान मेरे पीछे बैठ गया और उसके दोनों साथी वापस चले गए।

हज़रत अब्बास रज़ि० कहते हैं कि मैं अबू सुफ़ियान को लेकर चला। जब किसी अलाव के पास से गुज़रता, तो लोग कहते कौन हैं? मगर जब देखते रसूलुल्लाह सल्ल० का ख़च्चर है और मैं उस पर सवार हूं तो कहते कि रसूलुल्लाह सल्ल० के चचा हैं और आपके ख़च्चर पर हैं, यहां तक कि मैं उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के अलाव के पास से गुज़रा। उन्होंने कहा कौन है? और उठकर मेरी ओर आए। जब नीचे अबू सुफ़ियान को देखा, तो कहने लगे, अबू सुफ़ियान! अल्लाह का दुश्मन? अल्लाह का शुक्र है कि उसने बिना अह्द व पैमान के तुझे (हमारे) क़ाबू में कर दिया।

इसके बाद वह निकलकर अल्लाह के रसूल सल्ल० की ओर दौड़े और मैंने भी ख़च्चर को एड़ लगाई। मैं आगे बढ़ गया और ख़च्चर से कूदकर अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास जा घुसा। इतने में उमर बिन ख़त्ताब भी घुस आए और बोले कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! यह अबू सुफ़ियान है। मुझे इजाज़त दीजिए, मैं इसकी गरदन मार दूं।

मैंने कहा, अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैंने इसे पनाह दे दी है। फिर मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास बैठकर आपका सर पकड़ लिया और कहा, ख़ुदा की क़सम! आज रात मेरे सिवा कोई और आपसे सरगोशी (कानाफूसी) न करेगा।

जब अबू सुफ़ियान के बारे में हज़रत उमर रज़ि० ने बार-बार कहा, तो मैंने

कहा, उमर ! ठहर जाओ ख़ुदा की क़सम ! अगर यह बनी अदी बिन काब का नाम होता तो तुम ऐसी बात न कहते।

उमर रज़ि० ने कहा, अब्बास ! ठहर जाओ, ख़ुदा की क़सम ! तुम्हारा इस्लाम लाना मेरे नज़दीक ख़त्ताब के ईमान लाने से—अगर वह इस्लाम लाते—ज़्यादा पंसन्दीदा है और इसकी वजह मेरे लिए सिर्फ़ यह है कि रसूलुल्लाह सल्ल० के नज़दीक तुम्हारा इस्लाम लाना ख़त्ताब के इस्लाम से ज़्यादा पसन्दीदा है।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, अब्बास ! इसे (यानी अबू सुफ़ियान को) अपने डेरे में ले जाओ, सुबह मेरे पास ले आना। इस हुक्म के मुताबिक़ मैं उसे ड़ेरे में ले गया और सुबह नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर किया। आपने उसे देखकर फ़रमाया, अबू सुफ़ियान ! तुम पर अफ़सोस ! क्या अब भी तुम्हारे लिए वक़्त नहीं आया कि तुम यह जान सको कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं ?

अबू सुफ़ियान ने कहा, मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा, आप कितने बुर्दबार, कितने करीम और कितने रिश्तेदारों का ख़्याल रखने वाले हैं ? मैं अच्छी तरह समझ चुका हूं कि अगर अल्लाह के साथ कोई और भी माबूद होता, तो अब तक मेरे कुछ काम आया होता।

आपने फ़रमाया अबू सुफ़ियान ! तुम पर अफ़सोस ! क्या तुम्हारे लिए अब भी वक़्त नहीं आया कि तुम यह जान सको कि मैं अल्लाह का रसूल हूं ?

अबू सुफ़ियान ने कहा, मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा, आप कितने जानकार, कितने मेहरबान, कितने जोड़ने वाले हैं, इस बात के बारे में तो अब भी दिल में कुछ न कुछ खटक है।

इस पर हज़रत अब्बास ने कहा, अरे, गरदन मारे जाने से पहले की नौबत आने से पहले इस्लाम क़ुबूल कर लो और यह गवाही और इक़रार कर लो कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। इस पर अबू सुफ़ियान ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और हक़ की गवाही दी।

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अबू सुफ़ियान एज़ाज़ पसन्द (पद लोलुप) है, इसलिए इसे कोई एज़ाज़ दीजिए।

आपने फ़रमाया, जो अबू सुफ़ियान के घर में घुस जाए उसे अमान है और जो अपना दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर ले उसे अमान है और जो मस्जिदे हराम में दाख़िल हो जाए, उसे अमान है।

## इस्लामी फ़ौज मर्रज़्ज़हरान से मक्के की ओर

उसी सुबह, मंगल 17 रमज़ान सन् 08 हि० की सुबह, अल्लाह के रसूल सल्ल० मर्रज़्ज़हरान से मक्का रवाना हुए और हज़रत अब्बास रज़ि० को हुक्म दिया कि अबू सुफ़ियान को जहां घाटी तंग होती है, वहां पहाड़ के नाके के पास रोके रखें, ताकि यहां से गुज़रने वाली ख़ुदाई फ़ौजों को अबू सुफ़ियान देख सके। हज़रत अब्बास ने ऐसा ही किया।

इधर क़बीले अपने-अपने फरेरे लिए गुज़र रहे थे। जब वहां से कोई क़बीला गुज़रता तो अबू सुफ़ियान पूछता, अब्बास! ये कौन लोग हैं? जवाब में हज़रत अब्बास, मिसाल के तौर पर कहते कि बनू सुलैम हैं, तो अबू सुफ़ियान कहता कि मुझे सुलैम से क्या लेना-देना। फिर कोई क़बीला गुज़रता तो अबू सुफ़ियान पूछता कि ऐ अब्बास! ये कौन लोग हैं? वह कहते मुज़ैना हैं। अबू सुफ़ियान कहता, मुझे मुज़ैना से क्या लेना-देना? यहां तक कि सारे क़बीले एक-एक करके गुज़र गए।

जब भी कोई क़बीला गुज़रता तो अबू सुफ़ियान हज़रत अब्बास रज़ि० से उसके बारे में ज़रूर पूछता और जब वह उसे बताते तो वह ज़रूर कहता कि मुझे बनी फ़लां से क्या वास्ता? यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्ल० अपने हरे दस्ते के साथ तशरीफ़ लाए। आप मुहाजिरों और अंसार के बीच में चल रहे थे, यहां इंसानों के बजाए सिर्फ़ लोहे की बाड़ दिखाई पड़ रही थी।

अबू सुफ़ियान ने कहा, सुबहानल्लाह! ऐ अब्बास! ये कौन लोग हैं?

उन्होंने कहा, ये अंसार और मुहाजिरीन की देख-भाल में अल्लाह के रसूल सल्ल० तशरीफ़ ला रहे हैं।

अबू सुफ़ियान ने कहा, भला इनसे मोर्चा लेने की ताक़त किसे है? इसके बाद उसने आगे कहा, अबुल फ़ज़्ल! तुम्हारे भतीजे की बादशाही तो, अल्लाह की क़सम! बड़ी ज़बरदस्त हो गई।

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, अबू सुफ़ियान! यह नुबूवत है।

अबू सुफ़ियान ने कहा, हां, अब तो यही कहा जाएगा।

इस मौक़े पर एक घटना और घटी। अंसार का फरेरा हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० के पास था। वह अबू सुफ़ियान के पास से गुज़रे तो बोले—

'आज ख़ूरेंज़ी और मार-धाड़ का दिन है। आज हुर्मत हलाल कर ली जाएगी। आज अल्लाह ने क़ुरैश की ज़िल्लत मुक़द्दर कर दी है। इसके बाद जब

वहां रसूलुल्लाह सल्ल० गुज़रे तो अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने यह बात नहीं सुनी जो साद ने कही है ?

आपने फ़रमाया साद ने क्या कहा है ?

अबू सुफ़ियान ने कहा, यह और यह बात कही है।

यह सुनकर हज़रत उस्मान और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमें ख़तरा है कि कहीं साद क़ुरैश के अन्दर मार-धाड़ न करा दें ?

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, नहीं, बल्कि आज का दिन वह दिन है जिसमें काबे का सम्मान किया जाएगा। आज का दिन वह दिन है जिसमें अल्लाह क़ुरैश को इज़्ज़त बख़्शेगा। इसके बाद आपने हज़रत साद के पास आदमी भेजकर झंडा उनसे ले लिया और उनके सुपुत्र क़ैस के हवाले कर दिया, गोया झंडा हज़रत साद के हाथ से नहीं निकला और कहा जाता है कि झंडा आपने हज़रत ज़ुबैर के हवाले कर दिया था।

## इस्लामी फ़ौज अचानक क़ुरैश के सर पर

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० अबू सुफ़ियान के पास से गुज़र चुके, तो हज़रत अब्बास रज़ि० ने उससे कहा, अब दौड़कर अपनी क़ौम के पास जाओ। अबू सुफ़ियान तेज़ी से मक्का पहुंचा और बड़ी ऊंची आवाज़ से पुकारा, क़ुरैश के लोगो ! यह मुहम्मद हैं। तुम्हारे पास इतनी फ़ौज लेकर आए हैं कि मुक़ाबले की ताब नहीं। इसलिए जो अबू सुफ़ियान के घर में घुस जाए उसे अमान है।

लोगों ने कहा, अल्लाह तुझे मारे, तेरा घर हमारे कितने आदमियों के काम आ सकता है ?

अबू सुफ़ियान ने कहा; और जो अपना दरवाज़ा अन्दर से बन्दर कर ले, उसे भी अमान है और जो मस्जिदे हराम में दाख़िल हो जाए, उसे भी अमान है। यह सुनकर लोग अपने घरों और मस्जिदे हराम की ओर भागे, अलबत्ता अपने कुछ गुंडों को लगा दिया और कहा कि इन्हें हम आगे किए देते हैं। अगर क़ुरैश को कुछ कामियाबी हुई, तो हम इनके साथ हो रहेंगे और अगर इन पर चोट पड़ी, तो हमसे जो कुछ मांग की जाएगी, मंज़ूर कर लेंगे।

क़ुरैश के ये मूर्ख गुंडे मुसलमानों से लड़ने के लिए इक्रिमा बिन अबू जहल, सफ़वान बिन उमैया और सुहैल बिन अम्र की कमान में ख़ंदमा के अन्दर जमा हुए। उनमें बनू बक्र का एक आदमी हमास बिन क़ैस भी था जो इससे पहले

हथियार ठीक-ठाक करता रहता था, जिस पर उसकी बीवी ने (एक दिन) कहा, यह काहे की तैयारी है जो मैं देख रही हूं?

उसने कहा, मुहम्मद और उसके साथियों से मुक़ाबले की तैयारी है।

इस पर बीवी ने कहा, ख़ुदा की क़सम! मुहम्मद और उनके साथियों के मुक़ाबले में कोई चीज़ नहीं ठहर सकती।

उसने कहा, ख़ुदा की क़सम! मुझे उम्मीद है कि मैं उनके कुछ साथियों को तुम्हारा दास बनाऊंगा। इसके बाद कहने लगा—

'अगर आज वह हमारे मुक़ाबले में आ गए, तो मेरे लिए कोई उज्र न होगा, यह पूरा हथियार, लम्बी लम्बी अन्नी वाला नेज़ा, झट सौंती जानेवाली दोधारी तलवार।'

खंदमा की लड़ाई में यह व्यक्ति भी आया हुआ था।

## इस्लामी फ़ौज ज़ीतुवा में

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मर्रज़्ज़हरान से रवाना होकर ज़ीतुवा पहुंचे, इस बीच अल्लाह को बख़्शे हुए विजय-यश पर विनम्रता दिखाते हुई आपने अपना सर झुका रखा था, यहां तक कि दाढ़ी के बाल कजावे की लकड़ी से जा लग रहे थे।

ज़ीतुवा में आपने फ़ौज की तर्तीब और तक़्सीम फ़रमाई। खालिद बिन वलीद को अपने पहलू पर रखा। इसमें अस्लम, सुलैम, ग़िफ़ार, मुज़ैना, जुहैना और अरब के कुछ दूसरे क़बीले थे और खालिद बिन वलीद को हुक्म दिया कि वह मक्का के निचले भाग से दाख़िल हों और अगर क़ुरैश में से कोई आड़े आए तो उसे काटकर रख दें, यहां तक कि सफ़ा पर आपसे आ मिलें।

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम बाएं पहलू पर थे। उनके साथ अल्लाह के रसूल सल्ल० का फरेरा था। आपने उन्हें हुक्म दिया कि मक्का में ऊपरी हिस्से यानी कदा से दाख़िल हों और हजून में आपका झंगडा गाड़ कर आपके सामने आने तक वहीं ठहरे रहें।

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० प्यादे पर नियुक्त थे। आपने उन्हें हुक्म दिया कि घाटी के बीच का रास्ता पकड़ें, यहां तक कि मक्का में अल्लाह के रसूल सल्ल० के आगे उतरें।

## मक्का में इस्लामी फ़ौज का दाख़िला

इन हिदायतों के बाद तमाम दस्ते अपने अपने मुक़र्रर रास्तों पर चल पड़े।

हज़रत ख़ालिद और उनके साथियों के रास्ते में जो मुश्रिक भी आया, उसे सुला दिया गया, अलबत्ता उनके साथियों में से भी कर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी और ख़ुनैस बिन ख़ालिद बिन रबीआ भी शहीद हो गए। वजह यह हुई कि ये दोनों फ़ौज से बिछड़कर एक दूसरे रास्ते पर चल पड़े और इसी बीच उन्हें क़त्ल कर दिया गया।

ख़ंदमा पहुंचकर हज़रत ख़ालिद रज़ि० और उनके साथियों की मुठभेड़ क़ुरैश के गुंडों से हुई। मामूली सी झड़प में बारह मुश्रिक मारे गए और उसके बाद मुश्रिकों में भगदड़ मच गई। हमास बिन क़ैस जो मुसलमानों से लड़ाई के लिए हथियार ठीक-ठाक करता रहता था, भागकर अपने घर में जा घुसा और अपनी बीवी से बोला, दरवाज़ा बन्द कर लो।

उसने कहा, वह कहां गया जो तुम कहा करते थे?

कहने लगा, 'अगर तुमने ख़ंदमा की लड़ाई का हाल देखा होता, जबकि सफ़वान और इक्रिमा भाग खड़े हुए और सौंती हुई तलवारों से हमारा स्वागत किया गया, जो कलाइयां और खोपड़ियां इस तरह काटती जा रही थीं कि पीछे सिवाए उनके शोर और गोग़ा और हमहमा के कुछ सुनाई नहीं पड़ता था, तो तुम मलामत की छोटी सी बात न कहती।'

इसके बाद हज़रत ख़ालिद रज़ि० मक्का के गली-कूचों को रौंदते हुए सफ़ा पर्वत पर अल्लाह के रसूल सल्ल० से जा मिले।

इधर हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने आगे बढ़कर जहून में मस्जिद फ़त्ह के पास अल्लाह के रसूल सल्ल० का झंडा गाड़ा और आपके लिए एक क़ुब्बा नसब किया, फिर लगातार वहीं ठहरे रहे, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्ल० तशरीफ़ ले आए।

## मस्जिदे हराम में अल्लाह के रसूल सल्ल० का दाख़िला और बुतों से उसका पाक किया जाना

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० उठे और आगे-पीछे और आस-पास मौजूद अंसार और मुहाजिरों के साथ मस्जिदे हराम के अन्दर तशरीफ़ लाए, आगे बढ़कर हजरे अस्वद को चूमा और उसके बाद बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। उस वक़्त आपके हाथ में एक कमान थी और बैतुल्लाह के गिर्द और उसकी छत पर तीन सौ बुत थे। आप उसी कमान से उन बुतों को ठोकर मारते जा रहे थे और कहते जाते थे।—

'हक़ आ गया और बातिल चला गया। बातिल जानेवाली चीज़ है।' (17 : 18)

'हक़ आ गया और बातिल की चलत-फिरत ख़त्म हुई।' (34 : 49)

और आपकी ठोकर से बुत चेहरों के बल गिरते जाते थे।

आपने तवाफ़ अपनी ऊंटनी पर बैठकर फ़रमाया था और हालते एहराम में न होने की वजह से सिर्फ़ तवाफ़ ही पर बस किया। तवाफ़ पूरा करने के बाद हज़रत उस्मान बिन तलहा को बुलाकर काबे की कुंजी ली। फिर आपके हुक्म से ख़ाना काबा खोला गया। अन्दर दाख़िल हुए तो तस्वीरें नज़र आई, जिनमें हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलै० की तस्वीरें थीं और उनके हाथ में फ़ाल निकालने के तीर थे।

आपने यह मंज़र देखकर फ़रमाया, 'अल्लाह इन मुश्रिकों को हलाक करे। ख़ुदा की क़सम! इन दोनों पैग़म्बरों ने कभी भी फ़ाल के तीर इस्तेमाल नहीं किए। आपने ख़ाना काबा के अन्दर लकड़ी की बनी हुई एक कबूतरी भी देखी। उसे अपने मुबारक हाथ से तोड़ दिया और तस्वीरें आपके हुक्म से मिटा दी गईं।

## ख़ाना काबा में अल्लाह के रसूल सल्ल० की नमाज़ और क़ुरैश से ख़िताब

इसके बाद आपने अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। हज़रत उसामा रज़ि० और हज़रत बिलाल रज़ि० भी अन्दर ही थे। फिर दरवाज़े के सामने की दीवार का रुख़ किया। दीवार जब तीन हाथ की दूरी पर रह गयी, तो वहीं ठहर गए। दो खम्भे आपके बाईं ओर थे। एक खम्भा दाहिनी ओर और तीन खम्भे पीछे। उन दिनों ख़ाना काबा में छः खम्भे थे। फिर वहीं आपने नमाज़ पढ़ी। इसके बाद बैतुल्लाह के अन्दरूनी हिस्से का चक्कर लगाया। तमाम गोशों में तक्बीर व तौहीद के कलिमे कहे, फिर दरवाज़ा खोल दिया।

क़ुरैश (सामने) मस्जिदे हराम में सफ़ें लगाए खचाखच भरे थे। उन्हें इन्तिज़ार था कि आप क्या करते हैं। आपने दरवाज़ों के दोनों बाज़ू पकड़ लिए। क़ुरैश नीचे थे, उन्हें यों ख़िताब किया—

'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। उसने अपना वायदा सच कर दिखाया। अपने बन्दे की मदद की और सारे जत्थों को हराया। सुनो, बैतुल्लाह की कुंजी और हाजियों को पानी पिलाने के अलावा सारा रुत्बा, कमाल या ख़ून मेरे इन दोनों क़दमों के नीचे हैं। याद रखो, ग़लती से किया गया क़त्ल और उस सज़ा में जो कोड़े और दंडे से हो, भारी दियत है, यानी

सौ ऊंट जिनमें से चालीस ऊंटनियों के पेट में उनके बच्चे हों।

ऐ क़ुरैश के लोगो! अल्लाह ने तुमसे अज्ञानता के गर्व और बाप-दादा पर घमंड का अन्त कर दिया। सारे लोग आदम से हैं और आदम मिट्टी से थे। इसके बाद यह आयत तिलावत फ़रमाई—

'ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हें क़ौमों और क़बीलों में बांट दिया, ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको। तुममें अल्लाह के नज़दीक सबसे इज़्ज़तदार वही है, जो सबसे ज़्यादा ख़ुदा से डरने वाला हो। बेशक अल्लाह जानने वाला और ख़बर रखने वाला है।'

## आज कोई डांट नहीं

इसके बाद आपने फ़रमाया, क़ुरैश के लोगो! तुम्हारा क्या विचार है? मैं तुम्हारे साथ क्या व्यवहार करने वाला हूं?

उन्होंने कहा, अच्छा, आप करीम (दयालु) भाई हैं और करीम भाई के बेटे हैं।

आपने फ़रमाया, तो मैं तुमसे वही बात कह रहा हूं जो हज़रत यूसुफ़ अलै० ने अपने भाइयों से कही थी कि 'आज तुम पर कोई डांट नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो।'

## काबे की कुंजी

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिदे हराम में बैठ गए। हज़रत अली रज़ि० ने, जिनके हाथ में काबे की कुंजी थी, ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, हुज़ूर सल्ल०! हमें हाजियों को पानी पिलाने के पद के साथ ख़ाना काबा की कुंजी रखने का पद भी दे दीजिए। अल्लाह आप पर रहमत नाज़िल करे।

एक और रिवायत के मुताबिक़ यह गुज़ारिश हज़रत अब्बास रज़ि० ने की थी।

रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, उस्मान बिन तलहा कहां हैं? उन्हें बुलाया गया। आपने फ़रमाया, उस्मान! यह लो अपनी कुंजी। आज का दिन नेकी और वफ़ादारी का दिन है।

तबक़ाते इब्ने साद की रिवायत है कि आपने कुंजी देते हुए फ़रमाया, इसे हमेशा के लिए लो। तुम लोगों से इसे वही छीनेगा जो ज़ालिम होगा। ऐ उस्मान! अल्लाह ने तुम लोगों को अपने घर का अमीन (अमानत की रखवाली करने वाला) बनाया है, इसलिए इस बैतुल्लाह से तुम्हें जो कुछ मिले उसे भले तरीक़े के साथ खाना।

## काबा की छत पर बिलाल रज़ि० की अज़ान

अब नमाज़ का वक़्त हो चुका था। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत बिलाल रज़ि० को हुक्म दिया कि काबे पर चढ़कर अज़ान कहें। उस वक़्त अबू सुफ़ियान बिन हर्ब, अत्ताब बिन असीद और हारिस बिन हिशाम काबा के सेहन में बैठे थे। अत्ताब ने कहा, अल्लाह ने असीद को यह शरफ़ दिया कि उन्होंने यह (अज़ान) न सुनी, वरना उन्हें एक नागवार चीज़ सुननी पड़ती।

इस पर हारिस ने कहा, सुनो, अल्लाह की क़सम ! अगर मुझे मालूम हो जाए कि वह हक़ पर हैं, तो मैं उनका पैरोकार बन जाऊंगा।

इस पर अबू सुफ़ियान ने कहा, देखो, अल्लाह की क़सम ! मैं कुछ नहीं कहूंगा, क्योंकि अगर मैं बोलूंगा तो ये कंकरियां भी मेरे बारे में ख़बर दे देंगी।

इसके बाद नबी सल्ल० भी उनके पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया, अभी तुम लोगों ने जो बातें की हैं, वे मुझे मालूम हो चुकी हैं। फिर आपने उनकी बातें दोहरा दीं। इस पर हारिस और अत्ताब बोल उठे, हम गवाही देते हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं। ख़ुदा की क़सम ! कोई व्यक्ति हमारे साथ था ही नहीं कि हमारी इस बातचीत को वह जानता और हम कहते कि उसने आपको ख़बर दी होगी।

## विजय या शुक्राने की नमाज़

उसी दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० उम्मे हानी बिन्त अबी तालिब के घर तशरीफ़ ले गए। वहां स्नान किया और उनके घर ही में आठ रक्अत नमाज़ पढ़ी। यह चाश्त का वक़्त था, इसलिए किसी ने इसे चाश्त की नमाज़ समझा और किसी ने विजय की नमाज़।

उम्मे हानी ने अपने दो देवरों को पनाह दे रखी थी। आपने फ़रमाया, ऐ उम्मे हानी ! जिसे तुमने पनाह दी, उसे हमने भी पनाह दी। इस इर्शाद की वजह यह थी कि उम्मे हानी के भाई हज़रत अली बिन अबी तालिब उन दोनों को क़त्ल करना चाहते थे। इसलिए उम्मे हानी ने उन दोनों को छिपाकर घर का दरवाज़ा बन्द कर रखा था। जब नबी सल्ल० तशरीफ़ ले गए तो उनके बारे में पूछा और ऊपर के जवाब से ख़ुश हुईं।

## महान अपराधियों को माफ़ी नहीं

मक्का-विजय के दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने महान अपराधियों में से नौ आदमियों को माफ़ न क़रते हुए हुक्म दिया कि अगर

वे काबे के परदे के नीचे भी पाए जाएं, तो उन्हें क़त्ल कर दिया जाए। उनके नाम ये हैं—

1. अब्दुल उज़्ज़ा बिन ख़तल, 2. अब्दुल्लाह बिन साद बिन अबी सर्ह, 3. इक्रिमा बिन अबी जह्ल 4. हारिस बिन नुफ़ैल बिन वह्ब, 5. मुक़ीस बिन सबाबा, 6. हब्बार बिन अस्वद, 7-8. इब्ने ख़तल की दो लौंडियां, जो नबी सल्ल० की बुराई के गीत गातीं और गालियां देती थीं, 9. सारा, जो अब्दुल मुत्तलिब की औलाद में से किसी की लौंडी थी। उसी के पास हातिब का ख़त पाया गया था।

इब्ने अबी सर्ह का मामला यह हुआ कि उसे हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने नबी सल्ल० की खिदमत में ले जाकर जान बख़्शी की सिफ़ारिश कर दी और आपने उसकी जान बख़्शी फ़रमाते हुए उसका इस्लाम कुबूल कर लिया, लेकिन इससे पहले आप कुछ देर तक इस उम्मीद में ख़ामोश रहे कि कोई सहाबी उसे उठाकर क़त्ल कर देंगे, क्योंकि यह व्यक्ति इससे पहले भी एक बार इस्लाम कुबूल कर चुका था और हिजरत करके मदीना आया था, लेकिन इस्लाम से विमुख होकर भाग गया था, (फिर भी उसके बाद का चरित्र उनके बेहतर इस्लाम को पेश करता है। रज़ियल्लाहु अन्हु)

इक्रिमा बिन अबी जह्ल ने भागकर यमन की राह ली, लेकिन उनकी बीवी ने नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसके लिए अमान तलब कर ली और आपने अमान दे दी। इसके बाद वह इक्रिमा के पीछे गईं और उसे साथ ले आईं। उसने वापस आकर इस्लाम कुबूल किया और उनके इस्लाम की स्थिति बहुत अच्छी रही।

इब्ने ख़तल ख़ाना काबा को पकड़कर लटका हुआ था। एक सहाबी ने नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर इसकी ख़बर दी। आपने फ़रमाया, उसे क़त्ल कर दो। उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया।

मुक़ीस बिन सबाबा को हज़रत नुमैला बिन अब्दुल्लाह ने क़त्ल किया। मुक़ीस भी पहले मुसलमान हो चुका था, लेकिन फिर एक अंसारी को क़त्ल करके इस्लाम से फिर गया और भागकर मुश्रिकों के पास चला गया था।

हारिस, मक्का में रसूलुल्लाह सल्ल० को बड़ा कष्ट दिया करता था। उसे हज़रत अली रज़ि० ने क़त्ल किया।

हब्बार बिन अस्वद वही व्यक्ति है जिसने अल्लाह के रसूल सल्ल० की सुपुत्री हज़रत ज़ैनब को उनकी हिजरत के मौक़े पर ऐसा कचूका मारा था कि वह हौदज से एक चट्टान पर जा गिरी थीं और इसकी वजह से उनका हमल (गर्भ)

गिर गया था। यह व्यक्ति मक्का-विजय के दिन निकल भागा, फिर मुसलमान हो गया और उसके इस्लाम की हालत अच्छी रही।

इब्ने ख़तल की दोनों लौंडियों में से एक क़त्ल की गई। दूसरी के लिए अमान तलब की गई और वह भी मुसलमान हो गई। (सार यह कि नौ में से चार क़त्ल किए गए, पांच की जान बख़्शी हुई और उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया।)

हाफ़िज़ इब्ने हजर लिखते हैं, जिन लोगों को माफ़ नहीं किया गया, उनमें से अबू माशर ने हारिस बिन तलाल ख़ुज़ाई का भी ज़िक्र किया है। उसे हज़रत अली रज़ि० ने क़त्ल किया।

इमाम हाकिम ने इसी सूची में काब बिन ज़ुहैर का उल्लेख किया है। काब की घटना मशहूर है। उसने बाद में आकर इस्लाम अपनाया और नबी सल्ल० की प्रशंसा की। (इसी सूची में) वह्शी बिन हर्ब और अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्द बिन्त उत्बा हैं, जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया और इब्ने ख़तब की लौंडी अरनब है, जो क़त्ल की गई और उम्मे साद है, यह भी क़त्ल की गई, जैसा कि इब्ने इस्हाक़ ने उल्लेख किया है। इस तरह मर्दों की तादाद आठ और औरतों की तायदाद छः हो जाती है। हो सकता है कि दोनों लौंडियां अरनब और उम्मे साद एक ही हों और मतभेद केवल नाम का हो या उपाधि और उपनाम की दृष्टि से मतभेद हो गया हो।[1]

## सफ़वान बिन उमैया और फ़ुज़ाला बिन उमैर का इस्लाम क़ुबूल करना

सफ़वान के बारे में यद्यपि कोई बात नहीं की गई थी, लेकिन क़ुरैश का एक बड़ा लीडर होने की हैसियत से उसे अपनी जान का ख़तरा था, इसीलिए वह भी भाग गया। उमैर बिन अम्र जुमही ने रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर उसके लिए अमान तलब की। आपने अमान दे दी और निशानी के तौर पर उमैर को अपनी वह पगड़ी दे दी जो मक्का में दाख़िले के वक़्त आपने सर पर बांध रखी थी।

उमैर सफ़वान के पास पहुंचे तो वह जद्दा से यमन जाने के लिए समुद्र पर सवार होने की तैयारी कर रहा था। उमैर उसे वापस ले आए। उसने रसूलुल्लाह सल्ल० से कहा, मुझे दो महीने की मोहलत दीजिए।

---

1. फ़त्हुल बारी 8/11, 12

आपने फ़रमाया, तुम्हें चार महीने का अधिकार है। इसके बाद सफ़वान ने इस्लाम अपना लिया। उसकी बीवी पहले ही मुसलमान हो चुकी थी। आपने दोनों को पहले ही निकाह पर बाक़ी रखा।

फ़ुज़ाला एक बहादुर आदमी था। जिस वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल० तवाफ़ कर रहे थे, वह क़त्ल की नीयत से आपके पास आया, लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० ने बता दिया कि उसके दिल में क्या है। इस पर वह मुसलमान हो गया।

## विजय के दूसरे दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० का ख़ुत्बा

विजय के दूसरे दिन ख़ुत्बा देने के लिए रसूलुल्लाह सल्ल० लोगों के बीच फिर खड़े हुए। आपने अल्लाह का गुणगान किया, फिर फ़रमाया, लोगो! अल्लाह ने जिस दिन आसमान व ज़मीन को पैदा किया, उसी दिन मक्का को हराम (हुर्मत वाला) शहर ठहराया। इसलिए वह अल्लाह की हुर्मत की वजह से क़ियामत तक के लिए हराम है। कोई आदमी जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखता हो, उसके लिए हलाल नहीं कि उसमें ख़ून बहाए या यहां का कोई पेड़ काटे। अगर कोई व्यक्ति इस बुनियाद पर छूट ले कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने यहां क़िताल किया, तो उससे कह दो कि अल्लाह ने अपने रसूल को इजाज़त दी थी, लेकिन तुम्हें इजाज़त नहीं दी है और मेरे लिए भी उसे सिर्फ़ दिन की एक घड़ी में हलाल किया गया। फिर आज उसकी हुरमत उसी तरह पलट आई, जिस तरह कल उसकी हुर्मत थी। अब चाहिए कि जो हाज़िर है वह ग़ायब को यह बात पहुंचा दे।

एक रिवायत में इतना और है कि यहां का कांटा न काटा जाए, शिकार न भगाया जाए और गिरी-पड़ी चीज़ न उठाई जाए, अलबत्ता वह आदमी उठा सकता है जो उसका परिचय कराए और यहां की घास न उखाड़ी जाए।

हज़रत अब्बास रज़ि०ने कहा, ऐ अल्लाह के सूल सल्ल०! मगर इज़ख़र, (अरब की मशहूर घास, जो मूज जैसी होती है और चाय और दवा के तौर पर इस्तेमाल होती है) क्योंकि यह लोहार और घर की (ज़रूरतों की) चीज़ है।

आपने फ़रमाया, मगर इज़ख़र।

बनू ख़ुज़ाआ ने उस दिन बनू लैस के एक आदमी को क़त्ल कर दिया, क्योंकि बनू लैस के हाथों उनका एक आदमी जाहिलियत में मारा गया था। रसूलुल्लाह सल्ल० ने इस बारे में फ़रमाया, ख़ुज़ाआ के लोगो! अपना हाथ क़त्ल से रोक लो, क्योंकि क़त्ल अगर फ़ायदेमंद होता, तो बहुत क़त्ल हो चुका। तुमने एक ऐसा आदमी क़त्ल किया है कि मैं उसकी दियत ज़रूर ही अदा करूंगा।

फिर मेरे इस स्थान के बाद अगर किसी ने किसी को क़त्ल किया तो क़त्ल किए गए व्यक्ति के वलियों (अभिभावकों) को दो बातों का अख़्तियार होगा, चाहें तो क़ातिल का ख़ून बहाएं और चाहें तो उससे दियत लें।

एक रिवायत में है कि इसके बाद यमन के एक आदमी ने, जिसका नाम अबू शाह था, उठकर अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! (इसे) मेरे लिए लिखवा दीजिए।

आपने फ़रमाया, अबू शाह के लिए लिख दो।[1]

## अंसार के अंदेशे

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का विजय पूरी कर चुके—और मालूम है कि यही आपका शहर, आपका जन्म स्थान और वतन था—तो अंसार ने आपस में कहा, क्या ख़्याल है अब अल्लाह ने रसूल सल्ल० को आपकी अपनी धरती और आपका अपना शहर जिता दिया है, तो आप यहीं ठहरेंगे? उस वक़्त आप सफ़ा पर हाथ उठाए दुआ फ़रमा रहे थे।

दुआ से फ़ारिग़ हुए तो मालूम किया, तुम लोगों ने क्या बात की है?

उन्होंने कहा, कुछ नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मगर आपने आग्रह किया तो अन्त में उन लोगों ने बतला दिया।

आपने फ़रमाया, ख़ुदा की पनाह, अब ज़िंदगी और मौत तुम्हारे साथ है।

## बैअत

जब अल्लाह ने रसूलुल्लाह सल्ल० और मुसलमानों को मक्का की जीत दे दी, तो मक्का वालों पर हक़ स्पष्ट हो गया और वह जान गए कि इस्लाम के सिवा कामियाबी का कोई रास्ता नहीं, इसलिए वे इस्लाम के ताबेदार बनते हुए बैअत के लिए जमा हो गए। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सफ़ा पर बैठकर लोगों से बैअत लेनी शुरू की। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० आपसे नीचे थे। और लोगों से अह्द व पैमान ले रहे थे। लोगों ने हुज़ूर सल्ल० से बैअत की कि जहां तक हो सकेगा, आपकी बात सुनेंगे और मानेंगे।

इस मौक़े पर तफ़्सीरे मदारिक में यह रिवायत आई है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मर्दों की बैअत से फ़ारिग़ हो चुके, तो वहीं सफ़ा

---

1. इन रिवायतों के लिए देखिए सहीह बुख़ारी, 1/22, 216, 247, 328, 329, 2/615, 617, सहीह मुस्लिम 1/437, 438, 439, इब्ने हिशाम, 2/415, 416, सुनन अबी दाऊद 2/276

ही पर औरतों से बैअत लेनी शुरू की। हज़रत उमर रज़ि० आपसे नीचे बैठे थे और आपके हुक्म पर औरतों से बैअत ले रहे थे और उन्हें आपकी बातें पहुंचा रहे थे।

इसी बीच अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्द बिन्त उत्बा भेस बदलकर आई। असल में हज़रत हमज़ा की लाश के साथ उसने जो हरकत की थी, उसकी वजह से वह डरी हुई थी कि कहीं अल्लाह के रसूल सल्ल० उसे पहचान न लें।

इधर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने (बैअत शुरू की, तो) फ़रमाया, मैं तुमसे इस बात पर बैअत लेता हूं कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करोगी। हज़रत उमर रज़ि० ने (यही बात दोहराते हुए) औरतों से इस बात पर बैअत ली कि वह अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करेंगी।

फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया और न चोरी करोगी।

इस पर हिन्दा बोल उठी, अबू सुफ़ियान कंजूस आदमी है। अगर मैं उसके माल में से कुछ ले लूं तो?

अबू सुफ़ियान ने (जो वहीं मौजूद थे) कहा, तुम जो कुछ ले लो, वह तुम्हारे लिए हलाल हैं।

रसूलुल्लाह सल्ल० मुस्कराने लगे। आपने हिन्दा को पहचान लिया, फ़रमाया, अच्छा.. तो तुम हो हिन्दा?

वह बोली, हां, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! जो कुछ गुज़र चुका है, उसे माफ़ फ़रमा दीजिए। अल्लाह आपको माफ़ फ़रमाए।

इसके बाद आपने फ़रमाया, 'और ज़िना न करोगी।'

इस पर हिन्दा ने कहा, भला कहीं हुर्रा (आज़ाद औरत) भी ज़िना करती है।

फिर आपने फ़रमाया, और अपनी औलाद को क़त्ल न करोगी।

हिन्दा ने कहा, हमने तो बचपन में उन्हें पाला-पोसा, लेकिन बड़े होने पर आप लोगों ने उन्हें क़त्ल कर दिया। इसलिए आप और वे ही बेहतर जानें। याद रहे कि हिन्दा का बेटा हंज़ला बिन अबी सुफ़ियान बद्र के दिन क़त्ल किया गया था।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० हंसते-हंसते चित लेट गए और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी मुस्कराए। इसके बाद आपने फ़रमाया, और कोई बोहतान न गढ़ोगी।

हिन्दा ने कहा, अल्लाह की क़सम! बोहतान बड़ी बुरी बात है और आप हमें वाक़ई हिदायत और अच्छे अख़्लाक़ का हुक्म देते हैं।

फिर आपने फ़रमाया, और किसी भली बात में रसूल की नाफ़रमानी न करोगी।

हिन्दा ने कहा, अल्लाह की क़सम! हम अपनी इस मज्लिस में अपने दिलों के अन्दर यह बात लेकर नहीं बैठी हैं कि आपकी नाफ़रमानी भी करेंगी।

फिर वापस होकर हिन्दा ने अपना बुत तोड़ दिया। वह उसे तोड़ती जा रही थी और कहती जा रही थी, हम तेरे ताल्लुक़ से धोखे में थे।[1]

सहीह बुख़ारी में है कि हिन्द बिन्त उत्बा आई और बोली, ऐ अल्लाह के रसूल! इस धरती पर कोई भी ख़ेमे वाले नहीं थे कि जिनका ज़लील होना आपके ख़ेमे वालों के ज़लील होने से बढ़कर मुझे पसन्द रहा हो, लेकिन आज यह हाल है कि धरती पर कोई ख़ेमे वाले नहीं हैं, जिनका प्रिय होना आपके ख़ेमे वालों के प्रिय होने से बढ़कर मुझे पसन्द हो। आपने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, अभी और अभी।

हिन्दा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! अबू सुफ़ियान कंजूस आदमी है, तो क्या मुझ पर कोई हरज है कि उसके माल से अपने घर वालों को खिलाऊं। आपने फ़रमाया, चलन के मुताबिक़ ले लेने में कोई हरज नहीं है।[2]

## मक्का में नबी सल्ल० का निवास और काम

मक्का में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 19 दिन निवास किया। उस बीच आप इस्लामी चिह्नों को नवीन करते रहे और लोगों को हिदायत व तक़्वा की रहनुमाई करते रहे। उन्हीं दिनों आपके हुक्म से हज़रत अबू उसैद ख़ुज़ाई ने नए सिरे से हरम-सीमाओं के खम्बे गाड़े। आपने इस्लाम की दावत और मक्का के आस-पास बुतों को तोड़ने के लिए बहुत से सराया भी रवाना किए और इस तरह सारे बुत तोड़ डाले गए। आपके मुनादी ने मक्का में एलान किया कि जो व्यक्ति अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, वह अपने घर में कोई बुत न छोड़े, बल्कि उसे तोड़ डाले।

## सराया और मुहिमें

1. मक्का विजय से यकसू होने जाने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 25 रमज़ान सन् 08 हि० को हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की

---

1. देखिए मदारिकुत्तंज़ील, लेख नसफ़ी, तफ़्सीर आयत बैअत
2. सहीह बुख़ारी मय फ़त्हुल बारी 7/175, 13/148, हदीस न० 3825

रहनुमाई में उज़्ज़ा को ढा देने के लिए एक सरीया रवाना फ़रमाया। उज़्ज़ा नख़ला में था। क़ुरैश और सारे बनू कनाना उसकी पूजा करते थे और यह उनका सबसे बड़ा बुत था। बनू शैबान उनके मुजाविर थे। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीस सवारों के साथ नख़ला जाकर उसे ढा दिया। वापसी पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मालूम किया कि तुमने कुछ देखा भी था? हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, नहीं। आपने फ़रमाया, तब तो तुमने हक़ीक़त में उसे ढाया ही नहीं, फिर से जाओ और उसे ढा दो। हज़रत ख़ालिद रज़ि० बिफरे और तलवार सौंते हुए दोबारा तशरीफ़ ले गए। अब की बार उनकी ओर एक नंगी, काली, बिखरे बालों वाली औरत निकली। मुजाविर उसे चीख़-चीख़ कर पुकारने लगा, लेकिन इतने में हज़रत ख़ालिद ने इतने ज़ोर की तलवार मारी कि उस औरत के दो टुकड़े हो गए। इसके बाद वापस आकर अल्लाह के रसूल सल्ल० को ख़बर दी।

आपने फ़रमाया, हां, वही उज़्ज़ा थी। अब वह मायूस हो चुकी है कि तुम्हारे देश में कभी भी उसकी पूजा की जाएगी।

2. इसके बाद आपने अम्र बिन आस रज़ि० को इसी महीने सुवाअ नामी बुत ढाने के लिए रवाना किया। यह मक्का से तीन मील की दूरी पर रबात में बनू हुज़ैल का एक बुत था। जब हज़रत अम्र रज़ि० वहां पहुंचे तो पुजारी ने पूछा, तुम क्या चाहते हो?

उन्होंने कहा, मुझे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इसे ढाने का हुक्म दिया है।

उसने कहा, तुम उस पर क़ादिर नहीं हो सकते।

हज़रत अम्र ने कहा, क्यों?

उसने कहा, (स्वाभाविक रूप से) रोक दिए जाओगे।

हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, तुम अब तक असत्य पर हो? तुम पर अफ़सोस, क्या यह सुनता या देखता है? इसके बाद बुत के पास जाकर उसे तोड़ डाला और अपने साथियों को हुक्म दिया कि वे उसके ख़ज़ाने वाला मकान ढा दें, लेकिन उसमें कुछ न मिला। फिर पुजारी से फ़रमाया, कहो, कैसा रहा?

उसने कहा, मैं अल्लाह के लिए इस्लाम ले आया।

3. इसी माह हज़रत साद बिन ज़ैद अशहली को बीस सवार देकर मनात की ओर रवाना किया गया। यह क़ुदैद के पास मुसल्लल में औस व ख़ज़रज और ग़स्सान वग़ैरह का बुत था। जब हज़रत साद वहां पहुंचे तो उसके पुजारी ने उनसे कहा, तुम क्या चाहते हो?

उन्होंने कहा, मनात को ढाना चाहता हूं।

उसने कहा, तुम जानो और तुम्हारा काम जाने।

हज़रत साद रज़ि० मनात की ओर बढ़े तो एक काली, नंगी, बिखरे सर वाली औरत निकली (वह अपना सीना पीट-पीटकर हाय-हाय कर रही थी।)

उससे पुजारी ने कहा, मनात! अपने कुछ नाफ़रमानों को पकड़ ले, लेकिन इतने में हज़रत साद ने तलवार मारकर उसका काम तमाम कर दिया। फिर लपककर बुत ढा दिया और उसे तोड़-फोड़ डाला। ख़ज़ाने में कुछ न मिला।

4. उज़्ज़ा को ढाकर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० वापस आए, तो उन्हें अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसी माह रमज़ान सन् 08 हि० में बनू जज़ीमा के पास रवाना फ़रमाया, लेकिन मक़्सूद हमला नहीं, बल्कि इस्लाम का प्रचार था। हज़रत ख़ालिद रज़ि० मुहाजिरीन व अंसार और बनू सुलैम के साढ़े तीन सौ लोगों को लेकर रवाना हुए और बनू जुज़ैमा के पास पहुंचकर इस्लाम की दावत दी। उन्होंने 'असलमना' (हम इस्लाम लाए) के बजाए 'सबाना, सबाना' (हमने अपना दीन छोड़ा, हमने अपना दीन छोड़ा) कहा।

इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने उनका क़त्ल और उनकी गिरफ़्तारी शुरू कर दी और एक-एक क़ैदी अपने हर-हर साथी के हवाले किया। फिर एक दिन हुक्म दिया कि हर आदमी अपने क़ैदी को क़त्ल कर दे, लेकिन हज़रत इब्ने उमर रज़ि० और उनके साथियों ने इस हुक्म के पूरा करने से इंकार कर दिया और जब नबी सल्ल० के पास आए, तो आपसे उसका ज़िक्र किया। आपने अपने दोनों हाथ उठाए और दोबार फ़रमाया, ऐ अल्लाह! ख़ालिद ने जो कुछ किया, मैं उससे तेरी तरफ़ छूट अपनाता हूं।[1]

इस मौक़े पर सिर्फ़ बनू सुलैम के लोगों ने अपने क़ैदियों को क़त्ल किया था, अंसार व मुहाजिरीन ने क़त्ल नहीं किया था। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० को भेजकर उनके क़त्ल किए गए लोगों की दियत और उनके नुक़्सानों का मुआवज़ा अदा फ़रमाया। इस मामले में हज़रत ख़ालिद और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० के बीच कुछ सख़्त कलामी और बुराई भी हो गई थी।

इसकी ख़बर रसूलुल्लाह सल्ल० को हुई तो आपने फ़रमाया, ख़ालिद! ठहर जाओ मेरे साथियों को कुछ कहने से बाज़ रहो। ख़ुदा की क़सम! अगर उहुद

---

1. सहीह बुख़ारी 1/450, 2/622

पहाड़ सोना हो जाए और वह सारे का सारा तुम अल्लाह की राह में ख़र्च कर दो, तब भी मेरे साथियों में से किसी एक आदमी की एक सुबह की इबादत या एक शाम की इबादत को नहीं पहुंच सकते।[1]

यह है मक्का-विजय की लड़ाई, यही वह निर्णायक लड़ाई और महान विजय है जिसने बुतपरस्ती की ताक़त पूरे तौर पर तोड़कर रख दी और उसका काम इस तरह तमाम कर दिया कि अरब प्रायद्वीप में उसके बाक़ी रहने की कोई गुंजाइश और जायज़ करने की कोई वजह बाक़ी न रह गई, क्योंकि आम क़बीले इस इन्तिज़ार में थे कि मुसलमानों और बुतपरस्तों में जो लड़ाई चल रही है, देखें उसका अंजाम क्या होता है?

इन क़बीलों को यह बात भी अच्छी तरह मालूम थी कि हरम पर वही मुसल्लत हो सकता है, जो हक़ पर हो। उनके इस पक्के एतक़ाद में पक्कापन उस वक़्त और पैदा हो गया, जब आधी सदी पहले हाथी वाले अबरहा और उसके साथियों के वाक़िए से आ गया था, क्योंकि अरब वालों ने देख लिया था कि अबरहा और उसके साथियों ने बैतुल्लाह का रुख़ किया, तो अल्लाह ने उन्हें हलाक करके भुस बना दिया।

याद रहे हुदैबिया इस महान विजय की प्रस्तावना था। इसकी वजह से अम्न व अमान का दौर-दौरा हो गया था। लोग खुलकर एक दूसरे से बातें करते थे। इस्लाम के बारे में विचार-विमर्श और वाद-विवाद किया करते थे।

मक्का के जो लोग परदे के पीछे मुसलमान थे, उन्हें भी इस समझौते के बाद अपने दीन के ज़ाहिर करने, उसका प्रचार करने और उस पर वाद-विवाद करने का मौक़ा मिला। इन हालात के नतीजे में बहुत से लोग मुसलमान हो गए, यहां तक कि इस्लामी फ़ौज की जो तायदाद पिछली किसी लड़ाई में तीन हज़ार से ज़्यादा न हो सकी थी, इस मक्का विजय की लड़ाई में दस हज़ार तक जा पहुंची।

इस निर्णायक लड़ाई ने लोगों की आंखें खोल दीं और उन पर पड़ा हुआ वह आख़िरी परदा हटा दिया जो इस्लाम क़ुबूल करने के रास्ते में रोक बना हुआ था। इस विजय के बाद पूरे अरब प्रायद्वीप के राजनीतिक और धार्मिक क्षितिज पर मुसलमानों का सूरज चमक रहा था और अब धार्मिक नेतृत्व और सांसारिक

---

1. इस ग़ज़वे का विवेचन निम्न स्रोतों से लिया गया है—
   इब्ने हिशाम 2/389-437, सहीह बुख़ारी 1/किताबुल जिहाद और किताबुल मनासिक 2/612-615, 622, फ़त्हुल बारी 8/3-27 सहीह मुस्लिम 1/437, 438 439, 2/102, 103, 130, ज़ादुल मआद 2/160-168, मुख़्तसरुस्सीरः, शेख़ अब्दुल्लाह, पृ० 322-351

सरदारी की बागडोर उनके हाथ में आ चुकी थी।

मानो हुदैबिया समझौता के बाद मुसलमानों के हक़ में जो फ़ायदेमंद तब्दीली शुरू हुई थी, इस विजय से पूरी हो गई और इसके बाद एक दूसरा दौर शुरू हुआ जो पूरे तौर पर मुसलमानों के हक़ में था और जिसमें पूरी स्थिति मुसलमानों के क़ाबू में थी और अरब क़ौमों के सामने केवल एक ही रास्ता था कि वे प्रतिनिधिमंडलों की शक्ल में रसूलुल्लाह सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम अपना लें और आपकी दावत लेकर पूरी दुनिया में फैल जाएं। अगले दो वर्षों में इसी की तैयारी की गई।

---

# तीसरा मरहला

यह अल्लाह के रसूल सल्ल० की पैग़म्बराना ज़िंदगी का आख़िरी मरहला है जो आपकी इस्लामी दावत के उन नतीजों की नुमाइन्दगी करता है जिन्हें आपने लगभग 23 साल की लम्बी जद्दोजेहद, कठिनाइयों, परेशानियों, हंगामों और फ़ित्नों, दंगों और जंगों और ख़ूनी लड़ाइयों के बाद प्राप्त किया था।

इस लम्बी मुद्दत में मक्का विजय सबसे महत्वपूर्ण सफलता थी, जो मुसलमानों ने प्राप्त की। इसकी वजह से हालात का धारा बदल गया और अरब में क्रान्ति आ गई।

यह विजय वास्तव में अपने पहले और बाद के दोनों युगों के बीच एक रेखा खींच देती है। चूंकि क़ुरैश, अरब वालों की नज़र में दीन की हिफ़ाज़त करने वाले और मददगार थे और पूरा अरब इस बारे में उनके आधीन था, इसलिए क़ुरैश के हथियार डालने का मतलब यह था कि पूरे अरब प्रायद्वीप में बुतपरस्ती वाले दीन का काम ख़त्म हो गया।

इस आख़िरी मरहले के दो हिस्से हैं—

1. मुजाहदा और क़िताल (संघर्ष और लड़ाई)
2. इस्लाम क़ुबूल करने के लिए क़ौमों और क़बीलों की दौड़,

ये दोनों शक्लें एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं और इस मरहले में आगे-पीछे भी और एक दूसरे के दौरान भी पेश आती रही हैं। अलबत्ता हमने किताबी तर्तीब यह अपनाई है कि एक का दूसरे से अलग ज़िक्र करें।

चूंकि पिछले पन्नों में लड़ाइयों का वर्णन चल रहा था और अगली लड़ाई उसी की एक शाखा की हैसियत रखती है, इसलिए यहां लड़ाइयों का उल्लेख पहले हो रहा है।

# हुनैन की लड़ाई

मक्का की विजय एक अचानक चोट के बाद मिली थी, जिस पर अरब चकित थे और पड़ोसी क़बीलों में इतनी ताक़त न थी कि यकायकी घटना से निमट सकें। इसलिए कुछ अड़ियल, ताक़तवर और घमंडी क़बीलों को छोड़कर बाक़ी सारे क़बीलों ने हथियार डाल दिए। अड़ियल क़बीलों में हवाज़िन और सक़ीफ़ सूची में चोटी पर थे। उनके साथ मुज़र, जुसम और साद बिन बक्र के क़बीले और बनू हलाल के कुछ लोग भी शामिल हो गए थे। इन सब क़बीलों का ताल्लुक़ कैसे ऐलान से था।

उन्हें यह बात स्वाभिमान और प्रतिष्ठा के विरुद्ध लग रही थी कि मुसलमानों के सामने हथियार डाल दें। इसलिए इन क़बीलों ने मालिक बिन औफ़ नसरी के पास जमा होकर तै किया कि मुसलमानों पर धावा बोल दिया जाए।

## दुश्मन की रवानगी और अवतास में पड़ाव

इस फ़ैसले के बाद मुसलमानों से लड़ने के लिए उनकी रवानगी अमल में आई तो जनरल कमांडर, मालिक बिन औफ़, उनके साथ माल मवेशी और बाल-बच्चे भी हांक लाया और आगे बढ़कर औतास घाटी में पड़ाव डाल दिया।

यँह हुनैन के क़रीब बनू हवाज़िन के इलाक़े में एक घाटी है, लेकिन यह घाटी हुनैन से अलग है। हुनैन एक दूसरी घाटी है जो ज़ुलमजाज़ के बाज़ू में वाक़े है। वहां से अरफ़ात होते हुए मक्के की दूरी दस मील से ज़्यादा है।[1]

## जंग के माहिर ने कहा

अवतास में उतरने के बाद लोग कमांडर के पास जमा हुए। उनमें दुरैद बिन सिम्मा भी था। यह बहुत बूढ़ा हो चुका था और अब अपनी जंगी जानकारी और मश्विरे के सिवा कुछ करने के लायक़ न था, लेकिन वह बुनियादी तौर पर बड़ा बहादुर और माहिर जंगजू रह चुका था। उसने मालूम किया, तुम लोग किस घाटी में हो?

जवाब दिया गया, अवतास में।

उसने कहा, यह सवारों की बेहतरीन चरागाह है, न पथरीली है, न खाईदार है, न भुरभुरी ढलान, लेकिन क्या बात है कि मैं ऊंटों की बलबलाहट, गधों की ढींच,

1. फ़त्हुल बारी 8/27, 42

बच्चों का रोना और बकरियों की ममियाहट सुन रहा हूं?

लोगों ने कहा, मालिक बिन औफ़ फ़ौज के साथ उनकी औरतों, बच्चों और माल-मवेशी भी हांक लाया है।

इस पर दुरैद ने मालिक को बुलाया और पूछा, तुमने ऐसा क्यों किया है?

उसने कहा, मैंने सोचा कि हर आदमी के पीछे उसके अह्ल और माल को लगा दूं ताकि वह उनकी हिफ़ाज़त के जज़्बे से लड़े।

दुरैद ने कहा, ख़ुदा की क़सम! भेड़ के चरवाहे हो। भला हार का मुंह देखने वालों को भी कोई चीज़ रोक सकती है? देखो अगर लड़ाई में तुम ग़ालिब भी रहे, तो भी फ़ायदेमंद, तो सिर्फ़ आदमी ही अपनी तलवार और नेज़े समेत होगा और अगर हार गए तो फिर तुम्हें अपने घरवालों और माल के सिलसिले में रुसवा होना पड़ेगा फिर दुरैद ने कुछ क़बीलों और सरदारों के बारे में सवाल किया और उसके बाद कहा—

ऐ मालिक! तुमने बनू हवाज़िन की औरतों और बच्चों को सवारों के हलक़ में लाकर कोई सही बात नहीं किया है। उन्हें उनके इलाक़े की सुरक्षित जगहों, और उनकी क़ौम की ऊपरी जगहों में भेज दो। इसके बाद घोड़ों की पीठ पर बैठकर बद-दीनों से टक्कर लो। अगर तुमने विजय पा ली तो पीछे वाले तुमसे आ मिलेंगे और तुम्हें हार का मुंह देखना पड़ा तो तुम्हारे बाल-बच्चे और माल-मवेशी बहरहाल सुरक्षित रहेंगे।

लेकिन जनरल कमांडर मालिक ने यह मश्विरा रद्द कर दिया और कहा, ख़ुदा की क़सम, मैं ऐसा नहीं कर सकता। तुम बूढ़े हो चुके हो और तुम्हारी अक़्ल भी बूढ़ी हो चुकी है। अल्लाह की क़सम! या तो हवाज़िन मेरी बात मानें या मैं इस तलवार पर टेक लगा दूंगा और यह मेरी पीठ के आर-पार निकल जाएगी।

हक़ीक़त तो यह है कि मालिक को यह गवारा न हुआ कि इस लड़ाई में दुरैद का भी नाम हो या उसका मश्विरा शामिल हो।

हवाज़िन ने कहा, हमने तुम्हारी बात मानी।

इस पर दुरैद ने कहा, यह ऐसी लड़ाई है जिसमें मैं न शरीक हूं और न यह मुझसे फ़ौत हुई है। काश मैं इसमें जवान होता, भाग-दौड़ और कोशिशें कर सकता, टांग के लम्बे, बालों वाले और बीच वाली बकरी जैसे घोड़े का नेतृत्व करता।

## दुश्मन के जासूस

इसके बाद मालिक के वे जासूस आए जो मुसलमानों के हालात का पता

लगाने पर नियुक्त किए गए थे। उनकी हालत यह थी कि उनका जोड़-जोड़ टूट-फूट गया था।

मालिक ने कहा, तुम्हारी तबाही हो, तुम्हें यह क्या हो गया है?

उन्होंने कहा, हमने कुछ चितकबरे घोड़ों पर सफ़ेद इंसान देखे और इतने में, अल्लाह की क़सम, हमारी यह हालत हो गई जिसे तुम देख रहे हो।

## अल्लाह के रसूल सल्ल० के जासूस

इधर अल्लाह के रसूल सल्ल० को भी दुश्मन के रवाना होने की ख़बरें मिल चुकी थीं। चुनांचे आपने अबू हदरद अस्लमी रज़ि० को यह हुक्म देकर रवाना फ़रमाया कि लोगों के बीच घुसकर ठहरें और उनके हालात का ठीक-ठीक पता लगाकर वापस आएं और आपको सूचना दें। उन्होंने ऐसा ही किया।

## अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का से हुनैन की ओर

सनीचर के दिन 06 शव्वाल सन् 08 हि० को अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मक्का से कूच फ़रमाया। आज आपको मक्का में आए हुए 19वां दिन था। बारह हज़ार की फ़ौज आपके साथ थी। दस हज़ार वह जो मक्का-विजय के लिए आपके साथ आई थी और दो हज़ार मक्का से, जिनमें अधिकांश नव मुस्लिम थे। नबी सल्ल० ने सफ़वान बिन उमैया से सौ ज़िरहें मय दूसरे हथियार उधार लीं और अत्ताब बिन असीद को मक्का का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया।

दोपहर बाद एक सवार ने आकर बताया कि मैंने फ़्लां और फ़्लां पहाड़ पर चढ़कर देखा तो क्या देखता हूं कि बनू हवाज़िन चेंट पेंट समेत आए हैं। उनकी औरतें, मवेशी और बकरियां सब साथ हैं।

अल्लाह के रसूल ने मुस्कराकर फ़रमाया, ये सब इनशाअल्लाह, कल मुसलमानों का माले ग़नीमत होंगी।

रात आई तो हज़रत अनस बिन अबी मरसद ग़नवी रज़ि० ने स्वयं सेवा की शक्ल में संतरी की ज़िम्मेदारियां निभाई।[1]

हुनैन जाते हुए लोगों ने बेर का एक बड़ा सा हरा पेड़ देखा, जिसको ज़ाते अनवात कहा जाता था। अरब (के मुश्रिक) इस पर अपने हथियार लटकाते थे, इसके पास जानवर ज़िब्ह करते थे और वहां दरगाह और मेला लगाते थे। कुछ फ़ौजियों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से कहा, आप हमारे लिए भी ज़ाते अनवात

---

1. देखिए सुनने अबू दाऊद मय औनुल माबूद 2/317 बाब फ़ज़्लुल हर्स फ़ी सबीलिल्लाह

बनवा दीजिए, जैसे इनके लिए ज़ाते अनवात है।

आपने फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर! उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मुहम्मद सल्ल० की जान है तुमने वैसी ही बात कही जैसी मूसा अलै० की क़ौम ने कही थी कि 'हमारे लिए भी एक माबूद बना दीजिए, जिस तरह इनके लिए माबूद हैं। ये तौर-तरीक़े हैं, तुम लोग भी यक़ीनन पहलों के तौर-तरीक़ों पर सवार होंगे।[1]

(बीच रास्ते में) कुछ लोगों ने फ़ौज की तायदाद ज़्यादा देखकर कहा था कि आज हम हरगिज़ नहीं हार सकते और यह बात अल्लाह के रसूल सल्ल० पर बोझ बनी थी।

## इस्लामी फ़ौज पर तीरंदाज़ों का अचानक हमला

इस्लामी फ़ौज मंगलवार और बुधवार के बीच की रात 10 शव्वाल को हुनैन पहुंची, लेकिन मालिक बिन औफ़ यहां पहले ही पहुंचकर और अपनी फ़ौज रात के अंधेरे में इस घाटी के अन्दर उतारकर उसे रास्तों, गुज़रगाहों, घाटियों, छिपी जगहों और दर्रों में फैला और छिपा चुका था और उसे यह हुक्म दे चुका था कि मुसलमान ज्यों ही ज़ाहिर हों, उन्हें तीरों से छलनी कर देना, फिर उन पर एक आदमी की तरह टूट पड़ना।

इधर भोर में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़ौज की तर्तीब लगाई और झंडा बांध-बांधकर लोगों में बांटे, फिर सुबह के झुटपुटे में मुसलमानों ने आगे बढ़कर हुनैन की घाटी में क़दम रखा। वे दुश्मन के वजूद से बिल्कुल बे-ख़बर थे। उन्हें क़तई नहीं मालूम था कि इस घाटी के तंग दर्रों के अन्दर सक़ीफ़ और हवाज़िन के जियाले उनकी घात में बैठे हैं, इसलिए वे बेख़बरी की हालत में पूरे इत्मीनान के साथ उतर रहे थे कि अचानक उन पर तीरों की वर्षा हुई, फिर तुरन्त ही दुश्मन उन पर परे के परे एक व्यक्ति की तरह टूट पड़े।

(इस अचानक हमले से मुसलमान न संभल सके) और उनमें ऐसी भगदड़ मची कि कोई किसी की तरफ़ न ताक रहा था, बिल्कुल बुरी हार थी, यहां तक कि अबू सुफ़ियान बिन हर्ब ने, जो अभी नए-नए मुसलमान हुए थे, कहा, अब इनकी भगदड़ समुद्र से पहले न रुकेगी और जबला या कलंदा बिन जुनैद ने चीख़कर कहा, देखो आज जादू झूठ हो गया। यह इब्ने इस्हाक़ का बयान है।

---

1. तिर्मिज़ी फ़ितन, बाब लतरक-ब-न-न सुननुन मन का-न क़ब-ल कुम 2/41, मुस्नद अहमद 5/281

बरा बिन आज़िब रज़ि० का बयान, जो सहीह बुख़ारी में रिवायत किया गया है, इससे अलग है। उनका इर्शाद है कि हवाज़िन तीरंदाज़ थे। हमने हमला किया, तो भाग खड़े हुए। इसके बाद हम ग़नीमत पर टूट पड़े और तीरों से हमारा स्वागत किया गया।[1]

और हज़रत अनस का बयान जो सहीह मुस्लिम में रिवायत किया गया है वह ज़ाहिर में तो इससे भी अलग है, पर बड़ी हद तक इसकी ताईद करता है। हज़रत अनस रज़ि० का इर्शाद है कि हमें मक्का पर विजय मिली, फिर हमने हुनैन पर चढ़ाई की। मुश्रिक बहुत अच्छी सफ़ों में आए जो हमने कभी न देखी थीं, सवारों की सफ़, फिर प्यादों की सफ़, फिर उनके पीछे औरतें, फिर भेड़-बकरियां, फिर दूसरे चौपाए। हम लोग बड़ी तायदाद में थे। हमारे सवारों में दाहिने हिस्से में ख़ालिद बिन वलीद थे, पर हमारे सवार हमारी पीठ के पीछे पनाह लेने लगे और ज़रा सी देर में हमारे सवार भाग खड़े हुए। बद्दू भी जागे और वे लोग भी जिन्हें तुम जानते हो।[2]

बहरहाल जब भगदड़ मची तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दाहिनी तरफ़ होकर पुकारा, लोगो, मेरी ओर आओ। मैं अब्दुल्लाह का बेटा मुहम्मद हूं। उस वक़्त उस जगह आपके साथ कुछ मुहाजिर और परिवार वालों के सिवा कोई न था। इब्ने इस्हाक़ के अनुसार उनकी तायदाद नौ या दस थी। नववी का इर्शाद है कि आपके साथ बारह आदमी क़दम जमाए रहे। इमाम अहमद और हाकिम (मुस्तदरक 2/117 ने इब्ने मसऊद से रिवायत की है कि मैं हुनैन के दिन अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ था। लोग पीठ फेरकर भाग गए, मगर आपके साथ अस्सी मुहाजिर और अंसार जमे रहे। हम अपने क़दमों पर (पैदल) थे और हमने पीठ नहीं फेरी। तिर्मिज़ी ने ब सनद हसन, इब्ने उमर की हदीस रिवायत की है। उनका बयान है कि मैंने अपने लोगों को हुनैन के दिन देखा कि उन्होंने पीठ फेर ली है और अल्लाह के रसूल सल्ल० के साथ एक सौ आदमी भी नहीं। (फ़त्हुल बारी 8/29, 30, साथ ही देखिए मुस्नद अबी याला 3/388, 389)

इन सबसे ज़्यादा नाज़ुक क्षणों में अल्लाह के रसूल सल्ल० की अपूर्व वीरता सामने आई यानी इस ज़ोरदार भगदड़ के बावजूद आपका रुख़ कुफ़्फ़ार की ओर था, और आप पेशक़दमी के लिए अपने ख़च्चर को एड़ लगा रहे थे और यह फ़रमा रहे थे—

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब यौ-म हुनै-न इज़्ज़ा आ-जबत-कुम
2. फ़त्हुल बारी 8/29

## दुश्मन की ज़बरदस्त हार

मिट्टी फेंकने के बाद कुछ ही देर गुज़री थी कि दुश्मन को बुरी हार का सामना करना पड़ा। सक़ीफ़ के लगभग सत्तर आदमी मारे गए और उनके पास जो कुछ माल, हथियार, औरतें और बच्चे थे, मुसलमानों के हाथ आए।

यही वह तब्दीली है जिसकी ओर अल्लाह अपने इस कथन में इशारा फ़रमाया है—

'और (अल्लाह ने) हुनैन के दिन (तुम्हारी मदद की) जब तुम्हें तुम्हारे ज़्यादा होने ने घमंड में डाल दिया था, पस वह तुम्हारे कुछ न काम आई और धरती फैलाव के बजाए तुम पर तंग हो गई, फिर तुम लोग पीठ फेरकर भागे। फिर अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर अपना सुकून उतारा और ऐसी फ़ौज भेजी जिसे तुमने नहीं देखा और कुफ़्र करने वालों को सज़ा दी और यही कुफ़्र करने वालों का बदला है।' (9 : 25, 26)

## पीछा किया गया

हारने के बाद दुश्मन के एक गिरोह ने तायफ़ का रुख़ किया, एक नख़ला की ओर भागा, और एक ने औतास का रास्ता लिया। दोनों फ़रीक़ों में थोड़ी-सी झड़प हुई। इसके बाद मुश्रिक भाग खड़े हुए, अलबत्ता इसी झड़प में एक टुकड़ी के कमांडर अबू आमिर अशअरी शहीद हो गये।

मुसलमान घुड़सवारों की एक दूसरी जमाअत ने नख़ला की ओर पसपा होने वाले मुश्रिकों का पीछा किया और दुरैद बिन सुम्मा को जा पकड़ा, जिसे रबीमा बिन रफ़ीअ ने क़त्ल कर दिया।

हार खाए हुए मुश्रिकों के तीसरे और सबसे बड़े गिरोह का पीछा करने के लिए जिसने तायफ़ की राह ली थी, ख़ुद अल्लाह के रसूल सल्ल० माले ग़नीमत जमा फ़रमाने के बाद रवाना हुए।

## ग़नीमत

माले ग़नीमत यह था—क़ैदी छः हज़ार, ऊंट चौबीस हज़ार, बकरी चालीस हज़ार से ज़्यादा, चांदी चार हज़ार औक़िया (यानी एक लाख साठ हज़ार दिरहम जिसकी मात्रा छः हज़ार क्विंटल से कुछ ही किलो कम होती है) अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इन सबको जमा करने का हुक्म दिया, फिर उसे जिअिर्राना में रोककर हज़रत मसऊद बिन अम्र ग़िफ़ारी रज़ि० की निगरानी में दे दिया और

जब तक ग़ज़वा तायफ़ से फ़ारिग़ न हो गए, उसे बांटा नहीं।

क़ैदियों में शीमा बिन्त हारिस सादिया भी थीं, जो अल्लाह के रसूल सल्ल० की दूध शरीक बहन थीं, जब उन्हें रसूलुल्लाह सल्ल० के पास लाया गया और उन्होंने अपना परिचय कराया तो उन्हें रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक निशानी के ज़रिए पहचान लिया, फिर उनका मान-सम्मान किया। अपनी चादर बिछाकर बिठाया और उपकार करते हुए उन्हें उनकी क़ौम में वापस कर दिया।

---